वर्ष 27 | भादवा-आश्विन | सितम्बर-2022 | अंक 9 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

प्रभुजी म्हारा प्रेम थी नमुं, मुर्ति थारी जोईने नमुं,
अरे ओ प्रभु! पाप मे कर्या, शुं ध शी हवे धर्म नहि कर्या,
माटे हे प्रभु तमने वीनमुं, तारजो हवे प्रभुजी ने स्तवुं,
दीनानाथजी दुःख कापजो, भविक जीव ने सुख आपजो,
महावीर स्वामी म्हारा, गुण गाऊं छुं नित्य तम्हारा ।।

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

साहस के हिसाब से सिद्धिः- *सिंह की गुफा में मनुष्य जाय तो हाथी के कुंभस्थल के मोती मिलते है। सियार की गुफा में जाय तो बछड़े की पूंछ और गधे की चमड़ी मिलती है। लेकिन सिंह की गुफा में प्रवेश करने की हिम्मत चाहिये। मनुष्य अगर सागर के तले जाए तो मोती मिलता है। किनारे पर तो शंख और छीप ही मिलते हैं। जितना ऊंचा साहस उतना ही ऊंचा इनाम!*

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ।

इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्डे॥

प्रत्याख्यान-त्याग या संवर से इच्छाओं का निरोध किया जाता है। इच्छानिरोध करने पर जीव सब पदार्थो के प्रति तृष्णारहित होकर परम शीतलता-प्रशांत भाव के साथ रहता है।

पाथेय

हे मेरे मधुर स्वामि! जो व्यक्ति तुम्हारी प्रज्ञा से हो गए हैं एक रुप जिनकी चेतना तुम्हारी परम चेतना तुम्हारी परम चेतना में हो गई है एकात्म जो स्वयं बन गई है तुम्हारा सर्वोच्च ज्ञान वे तुम्हें नहीं कर सकते प्रेम, क्योंकि वे बन गई है स्वयं तुम्हारी सत्ता का पूर्णाश। वे तुम्हारी महासत्ता के अपूर्व आनंद में हो गए, हे निमग्न पूर्णरुपेण। किन्तु उनमें नहीं रहती है एक भक्त की सी भाव विव्हलता जो हर्ष विभोर मुड़ जाता है तुम्हारी ऊंचाई एवं परारुप की ओर। अतएव जिसका एक मात्र व्रत है पृथ्वी पर तुम्हारे प्रेम की प्रस्थापना। इसी प्रेमी भक्त को ही तुम सिखाते हो अपने अनन्त एवं पवित्र प्रेम का पाठ और फिर उस प्रेम में इस पूरे विश्व के प्रति, जुड़ जाती है करुणा, सान्त्वना एवं कल्याण भावना। ओह! कितनी दिव्य प्रभा है तुम्हारे शाश्वत एकत्व की, कितना माधुर्य है तुम्हारे असीम आनन्द का, कितनी महिमा है तुम्हारे ज्ञान की, हे नाथ! तुम अचिन्त्य हो, अद्भूत हो।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-27 भादवा-आश्विन सितम्बर 2022 अंक-9

विषय सूची

1-	शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2-	विषय सूची	4
3-	आगमोद्धारक : एक स्वाध्याय तप (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4-	नीच गोत्र का क्षय करती है वंदना- शांतिलाल सगरावत, किसको कब भूख लगे	6
5-	पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. अरिहंत परमात्मा के पांच वैभव	7-8
6-	महाचमत्कारिक श्री माणिभद्र यक्षराज का जीवन चरित्र	9-11
7-	मैं देवपाल-पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.,मोबाईल की सीख	12
8-	श्री कल्याण मंदिर स्तोत्रम्, वर्ष 2022 का चार्तुमास	13-14
9-	बारह भावना, बुद्धिमान राजकुमार	15-16
10-	16 वें तीर्थंकर परम तारक श्री शांतिनाथ भगवान	17-18
11-	जैन दर्शन में कालचक्र का विभाजन-प्रयोग और उपयोग-डॉ.सुभाष जैन, पात्र बने	19-20
12-	पर्यावरण रक्षक जैन धर्म- सुभाष जैन, जिन शासन : एक अद्भूत कंपनी	21-22
13-	आचार्य श्रीमद् मानदेवसूरीश्वरजी महाराज साहेब, इरियावहिया सूत्र में 10 प्रकार से जीवों की हिंसा होती है वो बताया है	23-25
14-	संयम जीवन का मार्ग, उपधान तप, पाप विचार का प्रभाव	26
15-	आगम श्रुत महाज्ञानी : मुनिपुंग डॉ.श्री दीपरत्नसागरजी क्या आप जानते है ?- जे.के.संघवी	27-28
16-	वर्गपहेली- 328 - जयंतीलाल जैन	29
17-	ज्ञान गंगोत्री- 328 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.	30
18-	शासन-समाचार	31-41
19-	हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक	42

संपादकीय

आगमोद्धारक : एक स्वाध्याय तप

सारा संसार तरंगों के द्वारा संचालित और आंदोलित है। कितनी ही तरंगों से हमारा जीवन प्रभावित होता है किंतु इस ओर हमारा ध्यान नहीं जाता है। क्यों ? क्योंकि इस तरंगों के प्रभाव असर से सही रुप से हम परिचित नहीं है अगर यह ज्ञान, यह जानकारी हमें प्राप्त हो जाये तो निश्चित रुप से जीवन कार्य प्रणाली में बढ़ा बदलाउ आ सकता है। विचारों की तरंगें, कर्म की तरंगें, भाषा और शब्द की तरंगें पूरे गगन मंडप में व्याप्त है जिसमें व्यक्ति की वैचारिक और मानसिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क और स्नायविक यंत्र प्रणाली आंदोलित होती है। अच्छे बुरे विचार जीवन में अनेक बदलाउ ला देते है। मन गंदे विचारों से प्रभावित न हो इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या हो सकता है ? मानसिक स्थिरता और शुभ भावों के प्रकटीकरण का ऐसा कौन सा साधन जो मानव को मन की स्थिरता प्रदान कर सकता है ?

हमारे महाऋषियों ने शास्त्रों में इसका साधन बतलाया है। बारह प्रकार के तपों का उल्लेख शास्त्रों से आता है, उसमें एक तप स्वाध्याय बतलाया गया है। पठन पाठन को तप की उपमा दी गई है। आप इस तप के द्वारा मन की शांति और स्थिरता पाकर मन मस्तिष्क को वैचारिक प्रदुषण से मुक्त कर तनावरहित जीवन जी सकते हैं। मैंने ऊपर उल्लेख किया है कि शब्द और भाषा की तरंगें मस्तिष्क को स्वस्थ बनाती है। हम स्वाध्याय तप के द्वारा आपके जीवन में स्थिरता शांति, संतोष लाने का काम आगमोद्धारक मासिक के द्वारा कर रहे हैं।

आगमोद्धारक दिनों दिन बढ़ती लोकप्रियता का सारा श्रेय उन पाठकों को जाता है जिन्होंने आगमोद्धारक में प्रकाशित होनेवाली पठन सामग्री को एवं धर्म सिद्धांतों की प्रशंसा करने के साथ अपना सदा आर्शीवाद दिया है, आगमोद्धारक को यह उपलब्धि किसी योजनाबद्ध तरीके या प्रचार के माध्यम से प्राप्त नहीं हुई है। इस बड़ी उपलब्धि को पाने के लिये तपना पड़ता है, हर सफलता परीक्षा मांगती है, हर अगली कक्षा में प्रवेश लेने के लिये परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है। हमें आनंद और प्रसन्नता है कि आगमोद्धारक के पाठकों ने हमें हर परीक्षा में सफलता दिलवाई और आगे की कक्षा में बैठने का अवसर प्रदान किया। आगमोद्धारक मात्र शब्दों का संग्रह नहीं है बल्कि आगमोद्धारक व्यंग्य, कटाक्ष, विवादास्पद, विध्वंसक, आपसी मतभेद, पंथवाद के झगड़े, साम्प्रदायिकता जैसी वैचारिक प्रदुषण फैलानेवाली तरंगों से ऊपर उठकर स्वच्छ पठन सामग्री परोसती है। आगमोद्धारक का उद्देश्य हमेशा सक्रिय सर्जनात्मक, सकारात्मक, स्वच्छ सोच को प्रदान करने का रहा है। विरोधात्मक विवादास्पद बातें छापकर क्षणिक आर्कषण से हमें परहेज है, हो सकता है यह किसी को अच्छा और बुरा भी लगता है परन्तु यह हमें स्वीकार्य नहीं है। क्योंकि हमारे गुरु भगवंतों और धर्म सिद्धांत के द्वारा हमें यह सत् प्रेरणा मिलती रहती है कि बुराईयों को बुराई से नहीं जीता जा सकता है और नहीं उनका अंत किया जा सकता है। हम उन अच्छाईयों पर चलना चाहते है जिस पर चलकर परमात्मा श्री वीरप्रभु ने बुराईयों को नतमस्तक कर दिया था। आगमोद्धारक को अच्छाईयां का प्रचार अच्छाई से करने का मार्गदर्शन हमारी गुरु परम्परा से प्राप्त हुआ है।

आगमोद्धारक हमेशा ही उन सद्गुणों और सद्विचारों पर चलकर आगे बढ़ी है जिससे अवगुण अपने आप ही परास्त हो जाते हैं। अवगुण निंदा के पात्र बनते है तो सद्गुण सद्विचार भी प्रोत्साहन और धन्यवाद के अभिलाषी होते हैं, आप हमें यह प्रदान कर रहे है। आगमोद्धारक अच्छे पहलुओं को प्रकट करने के साथ पाठकों के अच्छे भविष्य का निर्माण करना चाहती है इसीलिये आगमोद्धारक आपके बैठक कक्षा की टेबल पर रखी है रहना चाहिये, कोई भी उसे देखकर कुछ अंश भी पढ़ लेगा तो वह हमारी सफलता होगी। हम गलत पठन सामग्री का प्रकाशन कर सिर्फ पृष्ठ काले नहीं करना चाहते है।

गुरु भगवंतों के आर्शीवाद उनके मार्गदर्शन से हम सफलता के सोपान पर आगे बढ़ रहे है, हम किसी आर्कषण या उत्तेजना से प्रभावित हुए बगैर आगे बढ़ना चाहते हैं। हम हमारी सोच के समर्थक सभी पाठकों और हर शुभ चिंतकों का हृदय से आभार मानते है की आपका सहयोग और सहकार आगमोद्धारक की शक्ति बने, अपने सभी नाते रिश्तेदार, ईष्ट मित्र को आगमोद्धारक से जोड़कर आप भी स्वाध्याय तप का पुण्य प्रभाव प्राप्त करें यही शुभेच्छा !

- डॉ. सुभाष जैन

नीच गोत्र का क्षय करती है वंदना

* शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

(मोटापा दूर करने का अचूक उपाय)

''वंदणएवं णीयागोयं कम्म खवेइ। उच्चगोयं कम्मं णिबन्धइ। सोहगं च णं अप्पडिहय आणाफलणिव्वत्तेइ दाहिणभावं च ण जणयइ।''

- उत्तराध्ययन सूत्र- 29 अध्याय

वन्दना से नीच गोत्र का क्षय होता है और जीव उच्चगोत्र का बंधन करता है, आज्ञा और सौभाग्य अप्रतिहित हो जाता है और जनता से अनुकूल भाव याने समर्थन प्राप्त होता है।

तमिलनाडू में स्थित कुन्नूर में प्राकृतिक और आयुर्वेदिक चिकित्सक जो योगा और रैकी मास्टर पी. एच. डी. किये हुए हैं, मतानुसार ''वंदना'' को लेकर बतलाए तथ्य अति महत्वपूर्ण है-

1- हाथ जोड़ते समय दायाँ हाथ उत्तरी ध्रुव और बाँया हाथ दक्षिणी ध्रुव होकर दोनों को मिलाने से Bio Force ऊर्जा उत्पन्न होती है।

2- दोनों हाथ जोड़कर प्रदिक्षणा देते समय दाँये से बाँये घुमाते हैं, तो दो मीटर का वायुमण्डल शुद्ध होता है। तीन बार घुमाने से ऊर्जा तरंगे वायुमंडल और आभा मण्डल दोनों को शुद्ध करती है, इससे Wind Energy मिलती है और ऊपरी अंग पुष्ट होते हैं।

3- हाथ जोड़ हृदय के मध्यभाग को छूने से हृदयचक्र जाग्रत होता है जिससे प्रेम, करुणा, विश्वमैत्री भाव जाग्रत होता है।

4- णामंसामि, मत्थएणं वंदामि- पंचांग नमस्कार में नीचे झुकते वक्त हड्डी को छूती है तो थाइराईड ग्लैण्ड शुद्ध होती है। जुड़े हाथ जब ललाट पर लगते है, नीचे झुकने में आज्ञाचक्र जाग्रत होकर अहंभाव का नाश होत है, जो पूर्ण समर्पण है।

शरीर के सभी अंग सक्रिय होकर बलिष्ठ होते है। वंदना का ''वज्रासन'' उदर रोग नाशक एवं पाचन क्रिया सक्रिय करता है।

जब ललाट पृथ्वी से स्पर्शी करता है, तो भूमि की ऊर्जा सहस्त्रारचक्र ग्रहण करता है। (Connetion with Mother land)

5- वन्दना में पैर मिलने से शरीर का रक्त प्रवाह सम रहकर एकग्रता बढ़ती है।

6- वन्दना से सकारात्मक शक्ति मिलती है। सातों चक्रों पर जोर पड़ने से अशुद्ध ऊर्जा का निष्कासन होता है।

7- झुकते समय अंगूठों को जमीन पर टिकाये रखने से ऊर्जाचक्र सक्रिय रहता है। शरीर से बाहर नहीं जाता है।

8- वंदना में शरीर से पंचांग झुकते है जिससे कषायों में कमी आती है, क्योंकि क्रोध का स्थान मस्तिष्क, मान का स्थान गर्दन, माया का हृदय और लोभ को पूरे शरीर में व्याप्त बतलाया है। सारे अंगों से भावपूर्वक झुकने से चारों में कमी आती है।

9- वंदना में शरीर शक्तिवान होकर थकान दूर होती है।

10- मोटापा दूर करने के लिये सुबह का घुमना और घास पर चलने से अच्छा है, वंदना की जाय। इससे निर्जरा एवं पुण्य दोनों की वृद्धि होकर आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रादुभवि होता है। जो सर्वाधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

किसको कब भूख लगे

नारक जीवों को अंतर्मुहूत में भूख लगती है ! पृथ्वी आदि स्थावर जीव हरेक समय आहार लेते है ! विकलेन्द्रिय को अंतमुर्हूत में भूख लगती है ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय को जघान्य से अंतमुर्हूत में और उत्कृष्ट से दो दिन में भूख लगती है ! मनुष्य को जघान्य से अंतमुर्हूत में और उत्कृष्ट से तीन दिन में भूख लगती है ! (अवसर्पिणी के पहले आरे में युगलिकों को तीन दिन में, दूसरे आरे में दो दिन में, तीसरे आरे में एक दिन में, चौथे आरे में एक दिन में एकबार, पांचवें आरे में दिन में दो बार भूख लगती है और छट्ठे आरे में तो कोई भी मर्यादा नहीं !) दस हजार वर्ष के आयुष्यवाले देव को एक दिन में, पल्योपम के आयुष्यवाले देव को दो दिन से नव दिन तक, एक सागरोपम आयुष्यवाले देव को एक हजार वर्ष में और तैंतीस सागरोपम आयुष्यवाले देव को तैंतीस हजार वर्ष में भूख लगती है !- पन्नवणा पद-28

पाप की सजा भारी...!

✻प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

18 वां पाप मिथ्यात्वशल्यः-

मिथ्यात्व के त्याग करने से प्राणियों को शुद्ध सम्यक्त्व प्राप्ति को प्रयत्न करना चाहिये। यहां दो बात अध्यात्मसर के कर्ता ने कही हैं ग्राह्य-स्वीकार्य तत्व सम्यक्त्व है। जबकि उसका विपरित शब्द उल्टा अर्थ में है वह मिथ्यात्व है। जबकि उसका विपरित शब्द जो उल्टे अर्थ में है वह मिथ्यात्व है। अतः मिथ्यात्व त्याज्य हुआ। एतदर्थ जो पुरुषार्थ करना वहीं धर्म है। वहीं साधना है। सही दिशा है।

सबसे बढ़ा पापस्थान-मित्थात्वशल्यः-

अढारमुं जे पापनुं स्थानक, ते मिथ्यात्व परहरीएजी।
सत्तरथी पण ते एक भारी, होय तुलाए धरीएजो ॥

प्रतिक्रमण में हम जो सात लाख का सूत्र बोलते है उसके बाद अठारह पापस्थान का जो सूत्र बोलते हैं। उन्हीं 18 पाप स्थान का विवेचन प्रस्तुत ''पाप की सजा भारी'' पुस्तक में किया है। एक-एक पापस्थान का स्वरुप विस्तृत रुप से करने का प्रयत्न यहां पर क्रमशः किया गया है। अब अंतिम 18 वां पापस्थान ''मिथ्यात्वशल्य'' का आया है। अतः मिथ्यात्वशल्य का वर्णन यहां किया जा रहा है। यह पापस्थान वैसे 18 वें क्रम पर अन्त में आया है परन्तु वास्तव में देखा जाय तो सबसे पहले नम्बर का पाप है। और दूसरी दृष्टिसे देखा जाय तो यह 18 वां पाप ही एक ऐसा है जिसके अन्दर ऊपर के 17 ही पापों का समावेश हो जाता है। इसमें सभी पाप समा जाते हैं। अतः यह सब पापों की माता है। जन्मदातृ के रुप में मानी गई है।

उपरोक्त 17 पापस्थान हो और 18 वां न हो यह संभव है। ऐसा पात्र सम्यक्त्वी है परन्तु 18 वां मिथ्यात्व का पाप हो तो ऊपर के 17 जरुर होंगे। उदाहरणार्थ जैसे धुंआ होगा तो अग्नि अवश्य होगी। अतः धूंए के साथ अग्नि का अविनाभाव संबंध हुआ। यहां अविनाभाव संबंध का यह अर्थ है कि जिसके बिना जो न रह सके और जिसके साथ जो अवश्य ही रहे वह अविनाभाव संबंध हुआ। जैसे धुंआ रहेगा तो अग्नि जरुर रहेगी इसमें कोई शंका ही नहीं है। वैसे तो मिथ्यात्व के साथ उपरोक्त 17 पापों का आवनाभाव संबंध रहा। परन्तु अग्नि रहेगी वहां शायद धुंआ भी न रहे। उदाहणार्थ- एक लोहे का गोला अग्नि में तपाकर अलग रखा जाय तो वहां पर अग्नि जरुर दिखेगी परन्तु धुंआ नहीं रहता है। वैसे ही उपरोक्त 17 पापों के रहने पर मिथ्यात्व न भी रहे। वह स्थान हुआ सम्यक्त्वी का। अतः सम्यक्त्वी में 17 पाप रहे परन्तु 18 वां मिथ्यात्व नहीं रहा परन्तु जो सम्यक्त्वी नहीं होगा वह तो 18 ही पापों का मालिक होगा।

इसलिये उपाध्याय महाराज यहां पर फरमा रहे हैं कि - यदि एक बुद्धि रुपी तुला-तराजु में तोलें तो-एक तराजु के एक पल्ले में तो आप 17 पापों को रखो और दूसरे पल्ले में एक तरफ 18 वां पाप रखो इस तरह यदि तोला जाय तो भी 18 वां मिथ्यात्व शल्य का पाप का पल्ला नम जाएगा अर्थात् 17 से भी 18 वां बड़ा भारी है ज्यादा भारी है। इसी मिथ्यात्व का भार उन 17 से भी ज्यादा बढ़जाएगा। अतः एक तरफ तो 17 और एक तरफ अकेला एक18 वां पाप स्थान और फिर भी यह सबसे ज्यादा भारी है। अब आप सोचिए- कल्पना कीजिए कि यह कितना खातरनाक है ? कितना बड़ा भारी भयंकर पाप स्थान है ?

मिथ्यात्वशल्य का शब्दार्थः-

''विपरीतः भावः मिथ्याभावः'' पदार्थ के स्वरुप से जो विपरीत भाव है वह मिथ्याभाव है। अर्थात् जिस किसी भी वस्तु या व्यक्ति का जो सही स्वरुप है उसे उसी स्वरुप में न मानना-न जानना, न देखना न व्यवहार-प्रवृत्ति करनी। ये सब विपरित भाव उल्टे-विपरीत अर्थ में चलते है। उसे मिथ्यात्व कहते है। पदार्थ जैसा वास्तविक है उससे विपरीत ही मानना। उदाहरणार्थ जैसे पीतल को सोना मानना। पीलेपन की साद्दश्यता से सोनेपन की वृद्धि हुई। ऐसी मान्यता हुई परन्तु वास्तविकता की परीक्षा न की कि क्या है ? लाल-पीले सुन्दर रंगीन पत्थर को हीरा मान लेना। शुक्ति में रजत की बुद्धि रखना, टेढ़ी-मेढ़ी पढ़ी हुई रस्सी को अन्धेरे में सांप मान लेना ये सब भ्रम ज्ञान है और इस भ्रम से विपरीतता का व्यवहार होता है। अतः मिथ्याज्ञान विपरीत उल्टी दिशा में ले जाता है। मिथ्यात्व और सम्यक्त्व अर्थात मिथ्या और सम्यक् ये दोनों वास्तव में ज्ञान की प्रक्रिया है। ज्ञान आत्मा का गुण है और ज्ञान गुण का ही प्रवृत्ति संसार में मुख्य रुप से प्रचलित है। एक ही सिक्के की दो बाजु की तरह यहां एक ही आत्मा को ये दो ज्ञानावस्था है। एक मिथ्याज्ञानावस्था है और दूसरी सम्यक् ज्ञानावस्था है परन्तु दोनों में ही ज्ञान की मात्रा है-

प्रवृत्ति है। दोनों ही अपनी अपनी मान्यता की बात करेंगे। अपनी-अपनी जानकारी देंगे परन्तु मिथ्याज्ञानी में जो मिथ्या अर्थात् उल्टा ज्ञान विपरीत रुप में पड़ा हुआ है वह सही अर्थ में तो ज्ञान नहीं अज्ञान कहलाएगा अर्थात् पीले पीतल में सोने पने का ज्ञान भी तो ज्ञान ही हुआ परन्तु कैस ज्ञान ? तो कहेंगे विपरीत ज्ञान। अतः ऐसा विपरीत और उल्टाज्ञान अज्ञान के रुप में कहलाएगा। इसलिये मिथ्याज्ञानी की प्रवृत्ति अज्ञानी कहलाएगी जबकि सम्यक्त्वी ज्ञानी कहलाएगा। सम्यक्त्व वृत्ति वाले के पास एक-दो-चार या ज्यादा विषयों में भी उसके पास जो थोड़ा भी ज्ञान होगा वह सम्यग् ज्ञान कहलाएगा। सम्यक् का अर्थ है यथार्थ-सत्य ज्ञान अर्थात वास्तविक ज्ञान। यही सच्चा ज्ञान सम्यग् ज्ञान कहलाएगा। यद्यपि यह भी अपने अंदर पूर्ण न रहकर अपूर्ण भी रह सकता है फिर भी अपूर्ण होते हुए भी जितना है उतने अंश में जरुर पूर्ण है। शुद्ध है और सच्चा है। जबकि मिथ्या ज्ञानी का एक राई के जितना अंश भी सच्चा नहीं है। कृत्रिम कांच का रंगीन टुकड़ा हीरा है ही नहीं ? चाहे कितने भी प्रतिशत आप ज्ञान की मात्रा निकाला तो भी वहां अंशमात्र भी सिद्ध नहीं होगी। अतः ये सर्वथा विपरीत ज्ञान-अज्ञान रुप है। जैसे मानो किसी अन्ध को कुछ दिखाई ही नहीं देता है तो उसके लिये तो सारी दुनिया अंधेरे के समान ही है। चाहे दिन हो या रात हो ? चाहे काला रुप हो या गोरा रुप हो परन्तु उसके लिए तो सब कुछ अज्ञात ही है। कुछ भी ज्ञात नहीं है। यहां इसी संदर्भ में प्रज्ञाचक्षुवाले का एक रुपक दृष्टांत देते हैंः-

वीरसेन और शूरसेन का दृष्टांत :-

अंध न जीते परनी सेना, तिम मिथ्यादृष्टि नविसीजे जी।
वीरसेन और शूरसेन दृष्टांते समकित नी निर्युक्ते जी।
जोइ ने भली परे मन भावो, अेह अर्थ वर युक्ते जी॥

अठारहवें पापस्थान मिथ्यात्वशल्य की सज्झाय में उपरोक्त पंक्तियों में जो दृष्टांत दिया है वह इस प्रकार है- एक राजा के दो पुत्र थे। एक का नाम वीरसेन था और दूसरे का नाम शूरसेन था। वीरसेन जन्म से ही अन्ध था। राजा ने कलागुरु के पास अभ्यासार्थ दोनों पुत्रों को रखा। शूरसेन तो दोनों आंखों से सब देखता था अतः वह सब कलाएं सिख गया परन्तु वीरसेन जो जन्मान्ध था उसकी दूसरी इन्द्रियां ज्यादा सतेज थी अतः वह भी शब्द भेदी वाण आदि की कलाएं सिख गया। शूरसेन के जितना नहीं फिर भी काफी अच्छे प्रमाण में सुशिक्षित हुआ। दोनों ने कलाएं हांसिल की। एक बार युद्ध छिड़ा। शत्रु राजा के सैन्य ने इन पर चढ़ाई की। तब वीरसेन ने पिताजी से आग्रह किया कि- मुझे अनुमति प्रदान करें। मैं युद्ध के लिए जाऊं। पिता ने कहा- भाई ! तेरा काम नहीं। तुझे दिखता नहीं है और वे तेरे ऊपर धंस जाएंगे और सब बाजी बिगड़ जाएगी। फिर भी पिता की बात न मानते हुए भी वीरसेन सैन्य के साथ युद्ध करने गया। शत्रु राजा को इस भेद का पता चला। युद्ध में यद्यपि वीरसेन शब्द भेदी बाण बराबर चला रहा था परन्तु दुश्मन ने वीरसेन के पीछे जाकर गेरीला युद्ध की तरह पीठ में प्रहार किया। अतः वीरसेन घायल हो गया। अन्त में शूरसेन उसकी सहायतार्थ दौड़ा और शत्रु सैन्य को हराकर विजय प्राप्त कर अपने भाई वीरसेन को बचाकर ले आया !

अर्थात् इस रुपक दृष्टांत से सज्झायकार पू.श्री यशो विजयजी महाराज ने शुद्ध सम्यक्दृष्टि को शूरसेन की तरह देखता हुआ ज्ञानी बताया है और जबकि वीरसेन की तरह मित्यात्वी को अज्ञानी अंध बताया है। अब बिना ज्ञान की सब क्रिया या धर्मक्रिया भी हो तो वे सब अंध वीरसेन के युद्ध की तरह निरर्थक और स्वघातक है। दीक्षा लेकर साधु बनना, या तपश्चर्या करना या ध्यान-साधना करना आदि सर्व ऊंची क्रिया भी सम्यग् ज्ञान के बिना मिथ्यात्व की उपस्थिति में सब कुछ निरर्थक है। व्यर्थ जाती है। कोई लाभदायि नहीं होती है। मित्यात्व युक्त द्रव्य चारित्र से मोक्ष कदापि संभव नहीं है।
(आगे और भी है...!)

अरिहंत परमात्मा के पांच वैभव

1- वीतरागणं- गुणों के वैभव

2- सव्वणणूणं- ज्ञान के वैभव

3- देविंदपूईयाणं-वाणी के वैभव (वचन सिद्ध)

4- तेलोक्कगुरुणं- तीन लोक के गुरु पद के वैभव।

हमें देरासर में जाकर परमात्मा से इन पांच वैभव में से थोड़ा-थोड़ा हमें भी प्राप्त करना है। इसलिये हमें परमात्मा से प्रार्थना करनी है।

महाचमत्कारिक श्री माणिभद्र यक्षराज का जीवन चरित्र

भरत क्षेत्रः- मनुष्यों की दुनिया ढाई द्वीप फैली हुई है जिनमें 5 भरत क्षेत्र, 5 ऐरवत क्षेत्र, व 5 महाविदेह क्षेत्र में धर्मस्थापक श्री तीर्थंकर परमात्मा सदैव विचरण करते हैं और भाविक आत्मा उनके उपदेश को ग्रहण करके अहिंसा, संयम व तप के पालन द्वारा मोक्ष को प्राप्त करते है जबकि भरत क्षेत्र व ऐरवत क्षेत्र में कुछ मर्यादित समय तक ही तीर्थंकरों का भ्रमण होता है।

शत्रुंजय तीर्थः- जंबु द्वीप के भरत क्षेत्र के दक्षिणार्थ भारत के सोरठ देश में शत्रुंजय महातीर्थ है और वह प्रायः शाश्वत है जिससे इस भरत क्षेत्र की शोभा में चार चांद लग गये हैं। बाकी के 14 क्षेत्रों में ऐसा कोई शाश्वत तीर्थ नहीं है। इसलिये वहां के लोग भी यह भावना करते हैं कि हमने दक्षिणार्थ भरत में जन्म लिया होता तो उस महान तीर्थ की स्पर्शना कर सकते। इस तीर्थ में हर कंकर जितनी जगह पर अनंतानंत आत्मा मोक्ष को प्राप्त हुए है, जन्म-मृत्यु के फेरों को मिटाया है। इस शत्रुंजय महापर्वत में अनेक रस कुंपी व औषधि, अनेक जड़ी बूटी है एवं अनेक गुफाएं हैं। यह पर्वत प्रथम आरे में 80 योजन विस्तार का था। अवसर्पिणी काल में छटे आरे के अन्त में केवल सात हाथ का रहेगा। पर्वत पर मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान हैं। उन्होंने यहां 99 पूर्व बार आकर स्पर्शना की है। इस काल में 23 तीर्थंकरों ने इस भूमि को स्पर्श की। छःरिपालित संघ में आकर जो व्यक्ति गिरीराज की स्पर्शना करता है, उसके पाप धूल जाते हैं।

मरुधरः- ज्यों सोरठ देश में शत्रुंजय पर्वत है त्यों मरुधर में आबू, स्वर्णगिरी, जीरावाला, नाकोड़ा पार्श्वनाथ व चौदह सौ चवालीस (1444) स्तंभ युक्त राणकपुर तीर्थ है।

मगध देशः- मगध आदि देश सम्मेत शिखर, चम्पानगरी, पावापुरी, राजगृही, काकंदी , शौरीपुर, प्रयाग, अयोध्या आदि तीर्थो से पवित्र हुए हैं।

उज्जैन नगरीः- इसी प्रकार मालव देश विख्यात है। इस देश में मांडवगढ़, मक्सीजी व अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ आदि है। अवंती नगरी वर्तमानकाल में उज्जैन के नाम से जानी जाती है। इस उज्जैन में अनेक राजा हो चुके हैं। उन्होंने अपनी प्रजा का अच्छी तरह से पालन किया जिससे उज्जैन की जनता राजप्रिय थी। उसमें अनेक सेठ साहूकार हो चुके हैं। यह नगरी बड़ी-बड़ी हवेलियों व हाटों से अलंकृत थी।

माणेक शाह का जन्मः- इसी उज्जैन में भेरुगढ़ में माणेकशाह नाम के एक सेठ सौदागर बसते थे। राजा विक्रमादित्य की 15 शताब्दी थी। माणेक शाह का जन्म होने पर माता-पिता को काफी आनंद हुआ। उसका जन्म महोत्सव मनाया गया। दीन हीप दुःखियों को दान देकर संतुष्ट किया। उनकी जाति ओसवाल थी। पिता का नाम धर्मप्रिय शाह एवं माता का नाम जिनप्रिया था। उनको एक ही पुत्र होने से अत्यंत लाड़ला था और परिवार विशाल होने से नारियां उसे गोद ही गोद में खिलाती थी। ऐसे दुलारे को देखकर माता-पिता बहुत आनन्द विभोर होते थे। जब बालक कुछ बड़ा हुआ तब ही पिता धर्मप्रिय शाह ने इस नश्वर देह को छोड़कर इस लोक से विदाई ली।

शिक्षा व साखः- माता जिनप्रिया ने माणेक को जैन धर्म का शिक्षण व व्यवहारिक ज्ञान देकर पिता के माफिक ही शाह सौदागर बनाया। उसने पिता के काम काज को संभाल लिया और शाह सौदागर की पदवी प्राप्त की। व्यापार में उन्होंने अनीति को तो देश निकाला ही दे दिया था। दान-शील-तप, भाव इन चार धर्मो का योग्य रुप से पालन करते रहने से माणेकशाह लोकप्रिय व राजप्रिय बने थे।

विवाहः- व्यस्क होते ही माता ने उनका विवाह धारा नगरी के जग मशहूर भीम सेठ की पुत्री आनन्द रति के साथ करवाया। माणेक शाह धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष इन चारों कर्त्तव्यों का अबाधित रुप से पालन करते हुए संसार सुख भोग रहे थे।

मत परिवर्तनः- माणेक शाह के माता-पिता ओसवाल वंश और जैन धर्म की तपागच्छ शाखा के प्रिय थे। वे पू. आचार्य आनंद विमल सूरि के अनुयायी थे। माणेक शाह भी इसी धर्म का पालन करते थे। स्वयं की हवेली में ही जिन मंदिर और पोषध शाला थी। एक बार लोंका शाह के यति वहां आये हुए थे। भद्रिक परिणामी माणेक शाह धर्म श्रवण करने उनके पास जाते थे। उनकी कुयुक्तियों से माणेक शाह के मन में उन्होंने मूर्ति पूजा न करने का ठसा दिया। वे अपने परिवार का तपागच्छ मूर्तिपूजक श्रावक धर्म छोड़कर लोंकामति बन गये।

माणेक शाह का संकल्पः- यह बात जब उनकी माताजी जिनप्रिया को मालूम हुई तब उनकी आत्मा को बहुत दुःख हुआ और ओलीजी का पारणा में प्रतिज्ञा की कि जब तक माणेक सन्मार्ग पर नहीं आता तब तक घी नहीं खाना।

इस प्रकार की प्रतिज्ञा का पता जब माणेक शाह की धर्मपत्नी आनंद रति को पड़ा तब उन्हें बहुत ही दुःख हुआ और अपने पतिदेव को माता की प्रतिज्ञा की जानकारी दी। माणेक शाह ने पत्नि को उत्तर दिया कि जब कोई सद्गुरु मिलेंगे और मेरी शंका का समाधान करेंगे तब ही अपना निर्णय बदल सकता हूं। इस प्रकार छः माह व्यतीत हुए।

आचार्य महाराज का आगमनः- एक दिन आनन्द विमलसूरीजी की शाखा के आचार्य हेम विमल सूरीजी सत्रह साधुओं से सुशोभित उग्र विहार करते-करते भव्य जीवों को गांवों-गांव उपदेश देते हुए उज्जैन नगरी के बाहर आग्रवन नाम के उद्यान में पधारे और रात को प्रतिक्रमणादि आवश्यक क्रियाओं को निपटा कर काउसग्ग ध्यान में सब मुनिवर रहे।

अवहेलना व प्रायश्चितः- उस समय आचार्य महाराज आये हुए हैं ये मालूम पड़ते ही रात को अपने साथियों के साथ हाथ में मिशाल लेकर माणेक शाह उद्यान में आये। और मशाल लेकर पू. आचार्य महाराज के पास जाकर मशाल द्वारा अवहेलना करते हुए दाढ़ी के बाल जला दिये। तो भी आचार्य भगवंत ने क्षमा रखी। माणेक शाह ने उन्हें समता रस में निमग्न देखा तब उन्हें पश्चाताप हुआ। अपनी हवेली में आने के बाद पलंग पर सोये तब भी उन्हें नींद नहीं आई और अपनी भूल का बहुत ही पश्चाताप करने लगे और साधु की समता की अनुमोदना की।

विपुल झरनाः- ''धन्य है ऐसे क्षमासागर मुनिवर को ! लेश मात्र भी क्रोध नहीं। मुख कैसा प्रफुल्लित था। जरा सी भी उदासीनता नहीं। अहो ! धन्य है इन मुनिवरों को। कहां तो ऐसे पंच महाव्रतधारी साधु और कहां गद्दी पर बैठकर उपदेश देनेवाले यति ? दोनों के आचरण में राई और पहाड़ का फर्क है। सुबह उद्यान में से आचार्य भगवंत का पर्दापण संघ के साथ मेरे घर करवाउंगा, गलती की माफ ी मांगूगा और शंकाओं का समाधान करुंगा। ऐसे समता सागर मुनिवरों के चरणों की पवित्र धूल से मेरे अंगने को पवित्र करुंगा।''

इस तरह के विचारों में उन्होंने सारी रात बिताई। सुबह संघ को इकट्ठा किया। वाजित्रों की धून के साथ सुबह मुनिवरों को अपनी पौषध शाला में लाकर विराजमान किया। संघ के समक्ष अपनी रात की भूल की क्षमायाचना करके विनंती की कि ''हे पूज्य भगवंत ! मेरी शंकाओं का समाधान करने की कृपा करो।''

व्रत स्वीकारः- इस प्रकार गुरु के वचनों से माणेकशाह की शंका का निवारण हुआ और माह सुद-5 के शुभ दिन सम्यकत्व मूल बारह व्रतों का धारण किया। संघ में प्रभावना दी। गुरुदेव की वस्त्र पात्र आदि से पूजा की। दीन-हीन दुःखयों को अनुकम्पा दान दिया और आठम-चौदस को पौषध करने लगे। नियमित अष्टप्रकारी पूजा करने लगे और सुपात्र व्यक्ति की अत्यन्त उत्साह से भक्ति करने लगे।

गुरु महाराज ने भी माणेकशाह को श्रावकत्व की प्राप्ति करवा कर अन्यत्र विहार किया। नगरी-नगरी घूमते-घूमते आगरा नगर में चार्तुमास किया।

चार्तुमास में व्यापार स्थगितः- माणेक शाह को एक बार व्यापार के काम से आगरा जाना पड़ा। वहीं उन्होंने सुना कि पू.आ.श्री हेम विमल सूरीजी म.सा. चार्तुमास के लिए पधारे हुए हैं। जिस तरह बादलों की गर्जना से मयूर नाच उठता है उसी तरह इस समाचार को सुनकर माणेकशाह का हृदय नाच उठा। सारा व्यापार और कामकाज अपने मुनिमों को सौंप दिया। स्वयं निवृत्त होकर गुरु की निश्रा में सामायिक, प्रतिक्रमण, पचक्खाण, प्रभु पूजन, गुरु वैयावच्च, व्याख्यान श्रवण और आत्म-धर्म की धर्म चर्चाओं में समय व्यतीत करने लगे।

शत्रुंजय माहात्म्य श्रवण का प्रभावः- व्याख्यान में गुरुदेव भाविकों को ''शत्रुंजय माहात्म्य'' नामक ग्रन्थ समझाते थे। इस ग्रंथ में शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा का महत्व समझाया गया है। जो व्यक्ति शत्रुंजय की छः रिपालित यात्रा करें, नव्वाणु यात्रा करें, चौविहार छट्ठ करके सात यात्रा करें तथा चौविहार छट्ठ करके रायण के वृक्ष के नीचे ध्यान करें एवं उस पर यदि दूध झरता है तो ऐसे मनुष्यों के भव सीमित होते हैं। तीसरे, सातवें या आठवें भव में ही उनकी मुक्ति हो जाती है।

शत्रुंजय की स्पर्शना करने वाला मनुष्य कुछ भवों में ही सर्वकर्मों का क्षय करके मुक्तिधाम तक पहुंच जाता है।

अभिग्रह की भावनाः- ज्यों-ज्यों शत्रुंजय की यात्रा का वर्णन माणेकशाह सुनते हैं त्यों-त्यों उनके अन्तरमन में यात्रा की भावना बढ़ती जाती है। उनके मन की उमंग बढ़ी और उन्होंने दृढ़ संकल्प किया कि- मैं भी चौविहार उपवास करके, मौन रखकर नंगे पैर, नमस्कार मंत्र गिनते हुए, अकेले-अकेले शत्रुंजय की यात्रा करुंगा। पैदल सिद्धाचल जाऊंगा। इस संकल्प को और भी दृढ़ बनाने के लिये उन्होंने पू.गुरुदेव को विनंती करते हुए कहा कि-हे पूज्य गुरुवर मेरी भावना पूर्ण करने के लिये मैं अभिग्रह लेना चाहता हूं। मुझे आप श्री शुभाषीश दीजिये ताकि मेरी भावना पूर्ण हो।

गुरु महाराज ने कहा कि- हे माणेकशाह ! इस प्रतिज्ञा

को पूर्ण करने में बहुत ही कष्ट होगा। आगरा से सिद्धाचल काफी दूर है, आप ऐसी प्रतिज्ञा का पालन किस तरह कर सकेंगे ? इसलिए समझदारी से काम करो तो ज्यादा उचित रहेगा।

माणेकशाह ने विनंती की कि- ''हे गुरुदेव ! आपकी शुभाशीष मेरे लिये बहुत कुछ है। मुझे आप अभिग्रह दो।''

गुरु महाराज का आर्शीवादः- पूज्य आचार्यदेव ने तीन नवकार गिनते हुए श्री सिद्धाचल की छःरिपालित यात्रा की प्रतिज्ञा माणेकशाह को दी। वह दिन आसोज सुद-पंचमी का शुभ दिन था और उस दिन लग्न बल भी शुभ था। यों शुभ लग्न में, शुभ दिन को माणेकशाह ने प्रतिज्ञा ली।

कार्तिक की पूर्णिमा के दिन शत्रुंजय माहात्म्य ग्रंथ के प्रवचन की पूर्णाहुति हुई। गुरु महाराज के शुभ आर्शीवाद के साथ मांगलिक सुनकर माणेक शाह ने शत्रुंजय यात्रा के संकल्प पूर्वक नवकार महामंत्र का स्मरण करते हुए प्रयाण किया।

यात्रा की दिनचर्याः- सुबह-शाम आवश्यक क्रियाएं रास्ते में जहां-जहां जिन मंदिर हो वहां देव-दर्शन पूजा, गुरु वंदन आदि धर्मानुशासन के पालन पूर्वक प्रतिदिन उल्लासपूर्वक प्रयाण करते थे। न थकान का नाम और न उदासीनता का काम। संवेग रंग में रंगे जा रहे थे, पल मात्र भी वे शत्रुंजय और नवकार के स्मरण को नहीं चुके।

चोरों के हाथ मेंः- इस प्रकार गुजरात में पालनपुर के नजदीक मगरवाड़ गांव के निकट एक वन था वहां पहुंचे। डाकुओं की टोली थी। अकेले वणिक पुत्र को जल्दी-जल्दी और निःशंक रुप से जाते हुए देखकर डाकुओं ने गर्जना करते हुए कहा- ''ए बनिये ! खड़ा रह'' परन्तु माणेक शाह तनिक भी क्षोभायमान नहीं हुए। वे तो शत्रुंजय के ध्यान में ही थे। ध्यान के प्रभाव से मृत्यु के बाद वे यक्षों के इन्द्र माणिभद्र देव के रुप में देव बने।

इस प्रकार माणेक शाह सेठ शुभ ध्यान से मृत्यु पाकर देवगति को प्राप्त हुए और इस भव के बाद देवगति से पुनः मनुष्यगति में आकर शुद्ध चरित्र का पालन करेंगे और केवल ज्ञान को उपलब्ध होकर मुक्तिधाम जायेंगे।

माणिभद्र देव के तीन स्थानः- माणिभद्र देव के कहने के अनुसार उनके तीन स्थान हैः-

1- उज्जैन में जन्म हुआ, वहां उनके मस्तक की पूजा होती है। 2- आगलोड़ में धड़पूजा होती है और 3- मगरवाड़ में पिंडी की पूजा होती है।

आगलोड़ नगर में धड़स्थापनाः- पूज्य आचार्य शांति सोमसूरीजी महाराज ने श्री माणिभद्र वीर को प्रत्यक्ष करने के लिये और जैन शासन की उन्नति के लिये 121 उपवास किये। श्री माणिभद्र वीर प्रत्यक्ष हुए। माणिभद्र वीर की आज्ञानुसार वि.सं. 1733 की माह सुद-5 के दिन आगलोड़ नगर के बाहर वीर द्वारा बताये गये स्थान पर मिट्टी के पिंड का धड़स्थापित किया और पूज्य आचार्य शांति सोमसूरीजी ने उसकी प्रतिष्ठा की। माणिभद्र वीर ने कहा कि- ''आचार्य पद की प्राप्ति के बाद मगरवाड़ स्थानक पर न जाके आगलोड़ के स्थानक पर आकर जो अट्ठम तप करेगा, उसकी इच्छा की पूर्ति करुंगा।'' इस प्रकार कहकर वीर अदृश्य हुए। उस जगह पर पूज्य आचार्य महाराज के उपदेश से जैन शासन रक्षक देव का शिखरबंधी मंदिर श्री संघ ने बनवाया। जो वर्णन वृहत् संग्रहणी सूत्र में है, उसी प्रकार बनवाया है। यह मंदिर आज भी मौजूद है।

श्री माणिभद्र यक्षराज की साधनाः-

1- श्री माणिभद्र वीर ने अपने पहले के भव में आसोज सुद-5 के दिन शत्रुंजय यात्रा की प्रतिज्ञा ली थी, इसलिए आसोज सुद 5 की श्री माणिभद्र यक्षराज का महापूजन (हवन) होता है।

2- श्री माणिभद्र यक्षराज की आगलोड़ में स्थापना माह सुद 5 को हुई।

3- अक्षय तृतीया का दिन भी मांगलिक होने से साधना के लिये अच्छा है।

4- रवि, मंगल, गुरु ये माणिभद्र यक्षराज के वार है।

5- सुद 5, 8, 14 ये तिथियां यक्षराज की साधना के लिये श्रेष्ठ है। इन तिथियों को आयंबिल का तप करके पंच परमेष्ठि युक्त श्री माणिभद्र वीर के मंत्र का जाप करना।

मंत्रः- ''ॐ असिआउसा नमः श्री माणिभद्र दिशतु मम सदा सर्वे कर्येषु सिद्धिम्''

इस मंत्र की साधना रवि, मंगल या गुरुवार हो या सुद पक्ष की पांचम, आठम या चौदस तिथि हो तब प्रारंभ की जाती है। ऐसे 21 रवि, मंगल या गुरुवार को या पांचम, आठम या चौदस को प्रारम्भ करके पूर्ण करना। इस दिन 21 माला गिने और बीच के दिनों में रोज एक माला गिनें। इस दिन जिनेश्वर भगवंत के मंदिर में स्नात्र पूजा, आंगी वगैरह करें। इस प्रकार जप-तप करने वाला अनेक संकटों से बच जाता है। उसके रोग-शोक, दुःख-दरिद्रता दूर हो जाते है। उसकी सारी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। श्री माणिभद्र देव समकित-धारी देव है। इसीलिए जैन धर्म का विधि युक्त पालन करनेवालों के दुःखों को टालने में पूर्ण रुपेण सहायक होते हैं।

⬢ मैं देवपाल ⬢

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

नाम तो था मेरा देवपाल, लेकिन मुझे देवपाल कौन कहेगा ? मुझे तो सभी ''देवलो'' कहते थे। मैं अहीर का लड़का था न ? सेठ की गाय-भैंस चराना मेरा काम ! आप मेरे जीवन जानेंगे तो हैरत में पड़जाएंगे कि अहीर का लड़का भी कितनी प्रगति कर सकता है।

जंगल में मैं पशु चराने गया थ तब एक बार मैंने नदी की एक कगार, जिसका कुछ भाग अभी-अभी ही पानी के प्रवाह से बह गया था, वहां मैंने एक प्रतिमा देखी। मुझे याद आया- अरे, यह तो वही प्रतिमा जिसकी मेरे सेठ हर रोज पूजा करते हैं। मुझे यह प्रतिमा देखकर अपार आनंद आया। मैंने निश्चय किया- ये ही मेरे भगवान ! इन भगवान के दर्शन करने से पहले मैं कभी मुंह में अन्न-पानी नहीं डालूंगा। मैं अनन्य आस्था से इस प्रतिज्ञा का पालन करने लगा।

एक बार मुसलधार बरसात हुआ। मैं बाहर जा न सका। उस दिन कुछ भी खाया-पीया नहीं। नदी की उस प्रतिमा के दर्शन किये बिना कैसे खाया जा सकता है ? प्रतिज्ञा मतलब प्रतिज्ञा ! दूसरे दिन बरसात रुके उसका इंतजाम करने लगा। लेकिन मुसलधार बरसात तो मानो आकाश फाड़कर बरस रहा था। बंध हो ऐसे कोई चिन्ह नहीं दिख रहे थे। निरंतर सात दिन तक वर्षा चालू ही रही। किन्तु मैंने नहीं खाया सो नहीं ही खाया। सात दिन चौविहार उपवास किये। आठवें दिन जब आकाश निरभ्र बना, बरसात शांत हुआ तब मैं प्रभु-दर्शन के लिये निकला।

मेरे रोम-रोम में आदिनाथ.... आदिनाथ का गुंजन था। प्रभु के दर्शन होते ही मेरी आंखों में से अश्रुधारा बह चली। मैंने भावपूर्वक भक्ति की।

अचानक ही मेरी आंखें तेज से चौंधिया गयी। तेजके पुंज में मैंने एक देवी देखी। मैं कुछ बोलू उससे पहले ही वह बोली- ओ देवपाल ! तेरी परीक्षा के लिये ही मैंने सात दिन बरसात बरसाया था। मैं श्रीआदिनाथ भगवान की सेविका चक्रेश्वरीदेवी हूं। तेरी प्रभुभक्ति की निष्ठा से मैं खूश हुई हूं। देवपाल ! मुझ से तुझे जो मांगना हो वह मांग ले। लेकिन मुझे कहां कुछ मांगना ही था ? प्रभु-दर्शन में ही मुझे इतना आनंद आया था कि पूरा जगत मुझे तुच्छ लगता था। इस आनंद के अलावा मुझे दूसरा क्या चाहिये था ? मैंने तो निःस्पृह भाव से कह दिया- मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं भगवान की भक्ति को बेचना नहीं चाहता। बस.... भक्ति में ही मेरा चित्त रहे- यही चाहता हूं।

मेरी ऐसी निःस्पृहता से देवी बहुत खुश हुई। वह बोली- ''देवपाल ! अमोघं देवदर्शनम्'' देव के दर्शन कभी निष्फल नहीं जाते। तू भले कुछ नहीं मांगता हो, लेकिन मैं तुझे बिना दिये कैसे रह सकती हूं। मैं तुझे वरदान देती हूं कि- ''तू सात दिन में राजा बनेगा। राजा बनने के बाद भी मैं तुझे आवश्यकता होगी तब सहायता करुंगी।'' मैं कुछ जवाब दूं उससे पहले तो इतना कहकर देवी अदृश्य हो गयी।

प्रभु भक्ति का प्रत्यक्ष प्रभाव मैं स्तब्ध होकर देखता रहा। फिर मैं तो सात दिन में राजा बना। मुझे आज्ञा जब कोई मानने के लिये तैयार नहीं था तब देवी ने मेरी मदद की और मेरा प्रभाव देखकर सभी मेरी आज्ञा नतमस्तक मानने लगे। मेरा राज्य व्यवस्थित चलने लगा परन्तु राज्य में मैं कभी आसक्त नहीं बना। मैं तो अधिक से अधिक भगवान की भक्ति करने लगा। क्योंकि मुझे समझ में आ गया था कि सभी समृद्धि (बाह्य या आभ्यंतर) का मूल प्रभु भक्ति ही हैं। राज्यसत्ता मेरे पास होने से मैंने सर्वत्र भगवान के मंदिर बनवाये। बहुत ही शासन-प्रभावना की। अरिहंत की भक्ति के प्रभाव से मैंने तीर्थकर नाम कर्म बांधा। बंधुओं ! तीर्थकर नाम कर्म का मतलब आप जानते हैं ?

तीर्थकर नाम कर्म यानि ऐसा कर्म, जिसके उदय से अरिहंत बन सकते हैं। हां.... मैं भी एक दिन अरिहंत बनूंगा, भगवान बनूंगा। भक्ति की ऐसी शक्ति है कि वह आपको भगवान बना देती है। बंधुओं ! मेरे जैसे अहीर को भी भगवान में रुपांतरित करती प्रभु-भक्ति को कभी छोड़ना मत।

मोबाईल की सीख

1- पहली - जो हमें अच्छा लगे उसे सहज ले यानि Save कर लें।

2- दूसरी - जिससे दूसरे खुश रहे उसे बांटे Forward यानि करें।

3- तीसरी -जो किसी को अच्छा न लगे उसे Delete कर देवें।

यह बात जीवन के संदर्भ देखोगे तो हम हमेशा खुश रहेंगे।

श्री कल्याण मंदिर स्तोत्रम्

कल्याण मंदिर स्तोत्र आचार्य देवेश श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि द्वारा विरचित है। इसकी उत्पत्ति इस प्रकार है-उज्जयिनी नगरी में विक्रम राजा के पुरोहित के मुकुन्द नामक पुत्र था ! उसकी माता का नाम देवसिका था। वह मुकुंद पंडित एक बार भरुच जा रहा था। मार्ग में उसे वृद्धवादी सूरि मिले। उनके साथ ग्वालों की मध्यस्थता में वाद किया जिसमें मुकुंद पराजित हुआ। तब सूरि उसे राज्यसभा में ले गये। वहां भी वाद में सूरि ने उसे पराजित किया। इसलिये वह मुकुंद अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन सूरीजी का ही शिष्य बना। उस समय गुरु ने उनका कुमुदचंद्र नाम रखा। फिर अमुक्रम से उन्हें जब सूरिपद दिया तब उनका नाम श्रीसिद्धसेन दिवाकर रखा। एक दिन उनके साथ वाद करने के लिये आए हुए भट्टको सुनाने के लिये नवकार के स्थान पर **''नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यः''** इस प्रकार चौदह पूर्व में कथित संस्कृतवाक्य कहा। इसी प्रकार एक दिन उन श्रीसिद्धसेनसूरि ने अपने गुरु को कहा कि- ''ये सभी आगम प्राकृत में है इन्हें मैं संस्कृत में बना लूं। तब गुरु ने उन्हें कहा कि- ''बाल, स्त्री, मंद बुद्धिवाले और मूर्खजनों- जो चारित्र लेने के इच्छुक हो- उनके लिये तत्वज्ञानियों ने सिद्धान्त ग्रंथ-आगम प्राकृत में रचे हैं जो उपयुक्त है, फिर भी तुमने ऐसा विचार किया इससे तुम्हें बड़ी आशातना लगी है जिसका प्रायश्चित भी बड़ा भारी लगा है- ऐसा कहकर उन्हें गच्छ से बहिष्कृत किया। यह सुनकर संघ ने एकत्रित होकर गुरु को विज्ञप्ति की श्रीसिद्धसेन सूरि शासन के बड़े प्रभावक हैं, इन्हें गच्छ से बहिष्कृत करना उपयुक्त नहीं है। इस प्रकार संघ ने बड़ा आग्रह किया तब गुरु ने कहा- ''जब यह अठारह राजाओं को प्रतिबोधित कर उन्हें जैन बनाएगा तब यह गच्छ में आने योग्य बनेगा।'' इस प्रकार गुरु की आज्ञा अंगीकार कर श्रीसिद्धसेन सूरि उज्जयिनी नगरी में गए। वहां राजा विक्रम अश्वकीड़ा करने जा रहे थे। उन्होंने सूरि को देखकर उनका परिचय पूछा। सूरि ने अपना परिचय देते हुए कहा- ''मैं सर्वज्ञपुत्र हूं।'' यह सुनकर उनकी परीक्षा करने के लिये राजा ने उन्हें मन ही मन नमस्कार किया, जिस पर सूरि ने हाथ ऊंचा करके राजा को धर्मलाभ का आर्शीवाद दिया। राजा ने पूछा- ''किसे धर्मलाभ दे रहे हो ? सूरि बोले- जिसने हमें मन ही मन नमस्कार किया है उन्हें हमने धर्मलाभ दिया है। यह सुनकर प्रसन्न हुए राजा ने सूरि को एक करोड़स्वर्ण मुद्राएं भेंट की। सूरि ने उन्हें स्वीकार न कर धर्मकार्य में उसका उपयोग करवाया। इसके कुछ समय बाद सूरि चार श्लोक बनाकर राजद्वार गए। वहां उन्होंने राजा को पूछवाया कि- ''आपको मिलने के लिये एक भिक्षु चार श्लोक हाथ में रखकर आया है वह आए या जाए ? राजा ने कहलाया- ''दस लाख स्वर्ण मुद्राएं और चौदह हाथी में उन्हें अर्पण करता हूं अब उसे आना हो तो आए और जाना हो तो जाए।'' फिर सूरि ने राजा के पास जाकर अनुक्रम से चार श्लोक बोले। उन्हें सुनकर राजा ने एक 2 श्लोक के लिये एक 2 दिशा का राज्य देने का संकल्प किया, परन्तु आचार्य ने उसे स्वीकार न कर इतनी ही मांग की कि ''जब भी मैं आऊं आप मेरा धर्मोपदेश सुनें। राजा ने यह बात स्वीकार की। एक दिन वे सूरि महाकाल के मंदिर में जाकर शिवलिंग पर पांव रखकर सो गए। यह देखकर अनेक शिव भक्त जन क्रोधी हुए और उन्हें वहां से उठाने के लिये बहुत प्रयत्न करने लगे परन्तु सूरि तो वहां से नहीं उठे। अंत में भक्तजनों ने जाकर राजा को निवेदन किया। यह सुनकर राजा ने उन्हें बलपूर्वक भी मंदिर से बाहर उनके कहने पर भी सूरि वहां से नहीं उठे। तब राजसेवक उन्हें कोड़ों से पीटने लगे परन्तु वे प्रहार सूरि को न लगकर राजा की रानियों को लगने लगे। इससे अन्तःपुर में बड़ा कोलाहल हुआ। यह जानकर राजा आश्चर्यचकित होकर महाकाल के मंदिर में गया। वहां सूरि को पहचान कर राजा ने कहा- यह महादेव तो पूज्य है फिर भी आप उन पर पांव क्यों रखे हुए हैं ? सूरि बोले-यह महादेव नहीं है, महादेव तो अन्य ही हैं अतः ये देव मेरे द्वारा कृत स्तुति को सहन नहीं कर सकेंगे। राजा ने कहा- तब भी आप इसकी स्तुति करें। तब सूरि बोले- तो ठीक है, मैं स्तुति करता हूं। आप सावधान होकर सुनें। यह कहकर सूरि ने कल्याण मंदिर स्त्रोत की रचना शुरु की। इसमें ग्यारवहां श्लोक बोले कि- पृथ्वी कम्पायमान हुई, धुंआ निकला और शिवलिंग फटकर उसमें से धरणेन्द्र सहित पार्श्वनाथ स्वामी की महा तेजस्वी प्रतिमा

प्रकट हुई। आचार्य ने स्तोत्र सम्पूर्ण कर राजा को कहा- यहां भद्रा सेठानी का पुत्र अवंति सुकुमाल अनशन करके कायोत्सर्ग में रहकर, कालधर्म को प्राप्त कर नलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न हुआ था। इस स्थान पर उसकी स्मृति में उसके पुत्र ने महाकाल नामक यह नवीन चैत्य बनाकर उसमें पार्श्वप्रभु की प्रतिष्ठा की थी। कुछ समय पश्चात मिथ्या-दृष्टियों ने उस पर शिवलिंग स्थापित कर प्रतिमा को ढंक दिया था। वह मेरी स्तुति से प्रकट हुई है। यह सुनकर राजा ने हर्षित होकर उस मंदिर के खर्च हेतु एक गांव दिये और स्वयं ने सम्यक्त्व अंगीकार किया। तत्पश्चात श्रीसिद्धसेन सूरि ने राजा विक्रम राजा के अनुयायी अन्य अठारह राजाओं को प्रतिबोधित कर सम्यक्त्वधारी बनाए उनके गुण से प्रसन्न होकर विक्रम राजा ने सूरि के बैठने के लिये सुखासन भेंट किय उसमें बैठकर सूरि सदैव राजसभा में जाने लगे। इस बात का पता इनके गुरु वृद्धवादी को लगा। इस पर उन्हें प्रतिबोध देने के लिये वृद्धगामी गुरु उज्जयिनी में पहुंचे। वहां सूरि निरन्तर अत्यन्त व्यस्त रहते थे। अतः गुरु को उनके पास पहुंचने का अवसर नहीं मिला। तब वे गुरु कहार बनकर उपाश्रय के द्वार पर खड़े रहे। जब सिद्धसेनसूरि सुखासन में बैठकर राजद्वार जाने के लिये निकले तब वृद्धवादी ने एक कहार का स्थान ग्रहण कर पालखी उठाई परन्तु वे बहुत ही वृद्ध थे इसलिये उनकी चाल मंद थी। यह देखकर सिद्धसेन बोले- ''भुरिभारभराक्रान्तः स्कन्धः किं तव बाधति ?'' (हे वृद्ध ! अत्यन्त बोझ के समूह से बोझिल तेरा स्कन्ध क्या तुझे पीड़ा पहुंचा रहा है ?) यहां ''बांधते'' आत्मनेपद का रुप बोलना चाहिये जिसके बजाय ''बाधति '' यहां ''बोधते '' आत्मनेपद का रुप बोलना चाहिये जिसके बजाय ''बाधति '' परस्मैपद का अशुद्ध रुप श्रीसिद्धसेन दिवाकर सूरिजी बोले ! उस उदृष्टिकर वृद्धवादी सूरि बोल- ''न तथा बाधते स्कन्धो यथा वाधति बाधते'' - (हे सूरि ! तुम्हारे द्वारा प्रयुक्त बाधति का प्रयोग जितना पीड़ा पहुंचाता है- उतना यह मेरा स्कंध पीड़ा नहीं पहुंचाता) यह सुनकर अपनी गलती जानकर श्रीसिद्धसेन दिवाकर सूरिजी चौके और गलती निकालनेवाले उनके गुरु ही है ऐसा जानकर वे तुरन्त पालखी में से नीचे उतरे और गुरु के चरणों में गिरे। गुरु ने उन्हें प्रतिबोध देकर गच्छ में शामिल किया। ये श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी महाकवि हुए हैं।

वर्ष 2022 का चार्तुमास

1-अनेक धार्मिक सांस्कृतिक आयोजनों से सज्जा हैं।
2-भक्तों की भीड़, प्रवचन की बहार, आनंद-परमानंद की यात्रा गुरुभक्ति और ज्ञान से भरा हैं।
3-अपनापन और आत्मीयता से भरा हैं।
4- ऋद्धि-सिद्धि से भरा हैं।
5-प्रभु-गुरु एवं आचरण के गीतों के गान से भरा हैं।
6- गुरु मार्ग दिखायेंगे, चलना तो भक्तों को हैं।
7-आदर्श जीवन जीना सिखा रहा है।
8-राग से वीतराग की यात्रा करा रहा है।
9-समृद्धि और साधना के सूत्र से भरा हैं।

सारे देश में चार्तुमास हेतु क्रियाशील पांच महाव्रतधारी नवकार महामंत्र के तीसरे, चौथे, पांचवें पद पर विराजमान सभी गुरु भगवंतों एवं साध्वी मंडलों के श्रीचरणों में शत्-शत् वंदन करते हुए हम कामना करते है कि सन् 2022 का आपका चार्तुमास श्रीसंघों में तप, जप, धार्मिक आराधनाओं के द्वारा भाविकजनों के लिये मंगलमय बने एवं इस क्षेत्र में आपका आध्यात्मिक योगदान प्राणीमात्र के लिये शुभकारी हो। आपका धार्मिक पुरुषार्थ स्व पर हित कल्याणकारी हो यही शुभकामनाएं।

बारह भावना

1- अनित्य भावनाः- वैभव सुख और शरीर का सुख इत्यादि सर्व संसार के संबंध नष्ट होनेवाले है, अनित्य है। देव और मनुष्य, चक्रवर्ति का ऐश्वर्य, यौवन और जीवन भी अनित्य है, यह सृष्टि भी अनित्य है। बाह्य वस्तु (शरिरादी) का स्वभाव ही अनित्य है, नश्वर है, एक आत्मस्वरुप ही नित्य है, किसी भी अच्छी या विषम स्थिति में भी वह हमेशा हमारे पास ही रहता है, जो शुद्ध स्वरुपी है।

2- अशरण भावनाः- मरण के वक्त परलोक में जाते हुए देव, मनुष्य, इंद्र, किन्नर आदि कोई भी किसी का शरण कर सकते नहीं या कोई किसी का रक्षण कर सकता नहीं। इस जड़ माया से बचने के लिये, उसमें से आसक्ति दूर करने के लिये हमारे शुद्ध आत्मदेव की ही शरण में जाना पड़ेगा। किसी के मालिक बनने का, या किसी को शरण रखकर पालने का विचार या अहंकार का त्याग करके, परमात्म परायण होकर, शुद्ध आत्मदेव का शरण लेकर, इस शुद्ध आत्म स्थिति में मरण का भय भी टालकर समाधि मरण पा सकते हैं।

3- संसार भावनाः- चौदह राजलोक में, चौरासी लाख योनियों में भटकता जीव चार गति में जन्म, जरा, मृत्यु एवं मन की पीड़ा रुप अग्नि में जलता हुआ दुःख रुप संसार समुद्र में भटक रहा है। स्वतः के कर्म के अनुसार त्रस एवं स्थावर में उत्पन्न होकर मरण कर रहे हैं। संसार में सभी जीव जन्म, मरण, आधि, व्याधि, उपाधि, संयोग, वियोग से कितने ही आकुल-व्याकुल हो रहे हैं। एक आत्मज्ञानी सिवाय किसी के भी हृदय शांत नहीं है। आत्म भान में रहते हुए, आसक्ति बिना, किसी फल की इच्छा बिना, कर्म के उदय समय राग-द्वेष या हर्ष-शोक के परिणाम बिना कर्म को समता भाव में भोगकर अहंभाव को मिटाना है।

4- एकत्व भावनाः- जीव के जो पूर्व एवं अभी के शुभ या अशुभ कर्म है वह उसे स्वतः ही इस जन्म या अन्य जन्मों में अकेले को ही भोगना है। मैं अकेला आया हूं और अकेला ही जाऊंगा, यहां मेरा कोई नहीं है। दूसरों का पोषण का अभिमान पालकर स्वार्थवश जो पाप हम करेंगे उसका फल हमें अकेले को ही भोगना है। दूसरे जीव सिर्फ सुख-दुःख में निमित्त मात्र है। मैं अकेला दर्शन-ज्ञान युक्त शाश्वत आत्मा हूं ऐसे स्वरुप का विचार कर विवेक दृष्टि से उदय के कर्मों को अकेले भोगकर नवीन कर्म नहीं बांधने है।

5- अन्यत्व भावनाः- शरीर का स्वभाव व आत्मा का स्वभाव संपूर्णतः भिन्न है। सड़ना, गलना, बिखरना, नष्ट होना आदि शरीर का स्वभाव है एवं ज्ञानस्वरुप, आनंदमय एवं विशुद्ध स्वभाव आत्मा का है, ज्ञाता दृष्टा (देखना-जानना) यह आत्मा का स्वरुप है। कर्म-अणुओं के परदे से आत्मा दुषित हुआ है, इन दुषित संबंधों की वजह से आत्मास्वतः के ज्ञानस्वभाव को भूलकर कर्मों के उदय अनुसार राग-द्वेष रुप परिणमता है। स्वतः के आत्मा सिवाय बाकी सर्व पदार्थ अन्य है, अलग है, मेरे नहीं है आत्मा के प्रदेशों सिवाय एक अणु मात्र भी मेरा नहीं है। यह शरीर, इंद्रीयां, मन सर्व जड़ है और यह चैतन्य स्वरुप आत्मा ही मुझे अनुभव में लेना है।

6- अशुचि भावनाः- वीर्यादि बीजवाला, निंदनीय, अनेक अशुचियों से भरा हुआ, मलिन, स्वभाव के सार बिना और लज्जित गृह समान यह शरीर है। इसके नव द्वारों से मल, मूत्र, कफ, आदि अशुचि बहती रहती है, अन्दर मांस, हड्डियां, खून आदि चमड़ी सिवाय सारभूत कोई वस्तु नहीं है। इनको हम खुली आँखों से देखना व सूंघना भी पसंद नहीं करते। इस शरीर का स्नेह एवं मोह ही कम करना है शरीर से घृषा या द्वेष नहीं करना है। इस शरीर के माध्यम से हमें पारमार्थिक कार्य व्रत, जप, तप, ध्यान, समाधि आदि कार्य करते हुए अपने स्व को याने आत्मानुभूति के कार्य में ही लगाना है एवं मुक्ति पानी है।

7- आश्रव भावनाः- मन, वचन, काया की क्रिया के योग के द्वारा शुभ अशुभ कर्मो का ग्रहण करना ही आश्रव है। इंद्रीयाँ, अव्रत, कषाय, क्रिया आदि के राग-द्वेष द्वारा परिणमन से कार्मण वर्गणाएं कर्म के रुप में हमारे आत्मा से एक रुप हो जाते है। उनके आने के कारणों को जानकर उन्हें रोकने की कोशिश करनी है। शरीर बाहर से पुद्गलों को ग्रहण कर, मन-वचन को गति देता है और उसे राग-द्वेष में परिणत कर हर्ष-शोक कर कर्म का संचय करता है जो कार्मण शरीर के सत्ता में रहकर, रुपांतरित होकर सुख-दुःख अनुभव करता है।

8- संवर भावनाः- सर्व प्रकार से कर्मो के आश्रव को रोकना उसे संवर कहते है। राग-द्वेषादि अशुद्ध परिणामों का त्याग करके, मोह एवं अज्ञान के भाव से फैली हुई वृत्तियों का संवर करके, उसे शुभ भाव में लगाकर आगे आत्मा में लय करना है। देशविरती एवं सर्वविरती उसका माध्यम है जिसकी दृष्टि आत्मा की तरफ हो गई ऐसे सम्यग् दृष्टिवाले को पुद्गल पदार्थो में सुख नहीं सिर्फ आत्मा ही सुखरुप नजर आता है। उसे ही सच्चा मानकर वह आत्मशुद्धि करने का ही प्रयत्न करता है, तब वह सारी क्रियाएँ संवर रुप वर्तती है।

9- निर्जरा भावनाः- जन्म-मरणादि पीड़ा देनेवाले कर्म जिससे बिखरते है, खीरते है, वही निर्जरा है। निर्ग्रंथों को सकाम निर्जरा व अन्य को अकाम निर्जरा होती है। जो कर्म निश्चित भोगते पड़ते है वह निकाचित कर्म उपसर्गो से और अनिकाचित कर्म पश्चाताप वाली आत्मा के शुद्ध उपयोग रुप सद्भावना से खीरते है। बंध का सही कारण तो अज्ञान राग, द्वेष, ममत्व आदि है उसे ही दूर किये बगैर सिर्फ शरीर का नाश करने से कोई फायदा नहीं है। आते हुए कर्मो को समभाव से सहना व इच्छाओं का रोधन करते हुए तप करना इष्टानिष्ट में हर्ष शोक ना करते निज आत्मस्वरुप में परिणती करते रहना चाहिये।

10- धर्म भावनाः- दस प्रकार के धर्म स्वर्ग व मोक्ष को देने वाले उसकी प्राप्ति दुर्लभ है। उसमें आर्य देश, मनुष्य जन्म, उत्तम जाति, निरोगी पंचेन्द्रिय शरीर आदि दुर्लभ है। क्षमा रखना व देना, अभिमान व अहंवृत्ति से दूर होना, सरल हृदयी व माया रहित होना, संतोषमय जीवन बिताना, बाह्य-अभ्यंतर तप से इच्छारहित होना, मन व इंद्रिय निग्रह करके संयमित होना, सत्य स्वरुप होना, मन, वचन, काया से अशुभ में से शुभ में जाना, ब्रह्मचर्य पालते आत्मस्वरुपी बनना। सर्व जीवों को शांति व अभय देनेवाला व आत्म स्वरुप देखने वाला धर्म है।

11- लोक भावनाः- जिनेश्वर भगवान जिसमें जड़ व चैतन्य भाव है उसे लोक कहते है। उपर का भाग उर्द्धलोक (देवलोक) नीचे का भाग अधोलोक (नरक) व बीच का तीर्च्छालोक (मनुष्य लोक) है। यह लोक जीव धर्म, अधर्म आकाश, काल व पुद्गल इन छः द्रव्यों से भरा है। यह स्वयं सिद्ध है, इसका कोई बनाने वाला या मालिक नहीं है। ऐसे लोक में जीव आसक्ति द्वारा परिभ्रमण कर रहा है, इसे आत्मास्थिति तरफ मोड़कर स्वरुप स्थिति करते हुए लोक के अंत में ऊपर सिद्ध शीला में वास करवाना है।

12- बोधि भावनाः- लाखों जीवयोनियों में भ्रमण करते यह मनुष्य जन्म मिला। उसमें भी धर्म-आत्म स्वभाव प्रकट करने में मददगार आर्य देश, कुल, शरीर, बुद्धि, आयुष्य, सत्समागम व आत्मस्वरुप प्रगट करने की इच्छा मिलना दुर्लभ है और आगे तत्व स्वरुप को जानना, पाना यह अतिदुर्लभ। सम्यक्त्व, सम्यक्दृष्टि व तत्वज्ञान जैसी अमूल्य वस्तु की प्राप्ति भी अति दुर्लभ है। इस स्थिति से पतित भी हो सकते है। इसलिये वारंवार चेतना है, जागो-उठो व प्रयत्न-पुरुषार्थ करो नहीं तो अमूल्य जीवन बेकार हो जायेगा।

बुद्धिमान राजकुमार

एक बार शेरगढ़ के राजा शेर सिंह एवं दीवानपुर के राजा दीवानसिंह के मध्य किसी बात को लेकर अनबन हो गई। शेरसिंह ने बहुत चाहा कि दीवानसिंह से बदला ले, पर वे अपनी बुद्धिमानी से उनके हाथ न आए।

दीवानसिंह की मृत्यु के बाद एक दिन शेर सिंह ने उसके लड़के को पकड़वाकर मंगाया। राजकुमार अभी तक विद्या ग्रहण करने में लगा होने से संसार के व्यवहार से अनभिज्ञ था। शेरसिंह के पास आने से पूर्व राजकुमार को उनके सगे संबंधियों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार राजा के सवालों के जवाब बता दिये। तब राजकुमार ने कहा- अगर राजा इनमें से एक भी सवाल नहीं पूछेंगे तो क्या उत्तर दूंगा ? प्रत्युत्तर में उनकी माँ ने कहा- ''बेटा अपनी समझ से सवालों के जवाब देना, भगवान तुम्हारा अवश्य भला करेगा।'' जब राजकुमार शेर सिंह के दरबार में उपस्थित हुए तो उन्होंने दोनों हाथ पकड़कर लाल-पीली आँखें करते हुए कहा- ''तेरे बाप ने मेरे साथ बहुत बुरा किया। बता बदले में मैं तुझे क्या सजा दूं ?

राजकुमार ने बड़ी विन्रमता एवं बुद्धिमानी के साथ कहा- ''हुजूर ! विवाह में कन्यादान के समय पुरुष स्त्री का एक ही हाथ पकड़ता है और उस लाज के मारे वह उसको आजीवन निभाता है, आपने तो मेरे दोनों हाथ पकड़ रखे है, अब मुझे क्या डर है ?

राजकुमार के इस बुद्धिमत्तापूर्ण जवाब को सुनकर राजा शेर सिंह बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सारा राज राजकुमार को सौंप दिया। सच है, विद्या और बुद्धिरुपी शास्त्रों के बल से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

16 वें तीर्थंकर परम तारक श्री शांतिनाथ भगवान

काल चक्रः- समय (काल) परिवर्तनशील है। कभी वह उन्नत दिखाई देता है कभी अवनत। उत्थान के बाद पतन और पतन के बाद उत्थान का प्रवाह निरंतर बना रहता है।

जैन दर्शन में उत्थान से पतन की ओर जाने वाले काल को ''अवसर्पिणी काल'' और पतन से उत्थान की और जाने वाले काल को ''उत्सर्पिणी काल'' कहा गया है। हमारी आधुनिक घड़ी में 12 बजे से 6 बजे के अंक तक 6 भागों में विभक्त अवसर्पिणी काल का प्रतीत है और 6 से 12 बजे तक 6 उपभागों में विभक्त कल उत्सर्पिणी काल का दयोतक हैं। हसोन्मुख अवसर्पिणी काल के 6 विभाग इस प्रकार हैः-

1- सुषमा-सुषमा (सुख वाला काल)

2- सुषमा (सुख वाला काल)

3- सुषमा-दुषमा (अधिक सुख, अल्प दुःख)

4- दुषमा-सुषमा (अधिक दुःख, अल्प सुख)

5- दुषमा-दुषमा (अत्यधिक दुःखवाला या दुःख ही दुःख वाला काल)

दुषमा-सुषमा काल से कर्म भूमि/कर्म युग प्रारंभ हो जाता है। प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास होने लगता है। मनुष्यों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कृषि आदि कर्म करने पड़ते हैं। समाज के मार्ग दर्शन के लिए इस कल में 63 शलाका पुरुषों का जन्म होता है कि जिनमें 24 तीर्थंकर होते हैं। ये तीर्थंकर धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते हैं। मनुष्यों को धार्मिक मार्ग दर्शन करते हैं और मनुष्य धर्म आराधना कर मोक्ष प्राप्त करने हेतु प्रवृत्त होते हैं। उत्सर्पिणी चक्र के सुषमा आरे में भी 24 वें तीर्थंकर का जन्म होता है।

भगवान श्रीशांतिनाथः-

प्रवृत्तमान अवसर्पिणि काल में भी 24 तीर्थंकर हुए है। उनमें 16 वें तीर्थंकर हुए भगवान शांतिनाथ।

भगवान श्रीशांतिनाथ का गर्भ कल्याणकः-

स्थान हस्तिनापुर, महाराज विश्वसेन, महारानी अचिरा।

माघ का महीना था। अचानक हस्तिनापुर के राजभवन के प्रांगण में करोड़ों रत्नों की वर्षा होने लगी। 6 माह पश्चात भाद्रपद कृष्णा सप्तमी को भरणी नक्षत्र के शुभ योग में महारानी अचिरा देवी (ऐरा देवी) ने अति मंगल सूचक सिंह हाथी, माला, रत्न राशि आदि उत्तम 14 (या 16 स्वप्न देखें। उसी समय असंख्यात योजना दूर से स्वार्थसिद्धि स्वर्ग से शुभ योग में मेघरथ (भगवान श्रीशांतिनाथ के पूर्व भव का जीव) का जीव तीर्थंकर अवतार के रुप में रानी अचिरादेवी के उदर में अवतरित हुआ। महारानी ने महाराज विश्वसेन को मंगल स्वप्नों के बारे में बताया। महाराज विश्वसेन ने अपने अवधिज्ञान से जान लिया कि महारानी के उदर में त्रिलोकनाथ तीर्थंकर का आगमन हुआ है। महाराज ने महारानी को बताया कि यह जीव तीर्थंकर बनेगा तथा कामदेव, चक्रवर्ती तथा तीर्थंकर तीनों उपाधियों को धारण करेगा।

भगवान का जन्मः- ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी (कुछ ग्रंथों में चतुर्दशी कहा गया है) को भरणी नक्षत्र के मध्यरात्रि में माता अचिरा देवी ने कंचनवरणीय सर्वोत्कृष्ट पुत्र को जन्म दिया। उनके तेज से तीनों लोक प्रकाशित हो गए। नारकीय जीवों को भी दो क्षण का विराम मिला। स्वर्ग के दिव्य वाद्य बजने लगे। इंद्र-इंद्राणी जन्मोत्सव मनाने आ पहुंचे। इंद्र प्रभु को दिव्य ऐरावत हाथी पर बिठा कर शोभा यात्रा सहित इंद्रलोक ले गए और वहां भक्ति पूर्वक भगवान का अभिषेक किया।

नामकरणः- प्रभुदर्शन से सर्व जीवों को शांति हो रही थी। हस्तिनापुर नगर और देश में उस समय चल रही महामारी भी शांत हो गई थी। प्रजा को शांति प्राप्त हुई थी इसलिए इन्द्र ने भगवान का नाम **''शांतिनाथ''** रखा।

विवाह और राज्यः- भगवान श्रीशांतिनाथ के जन्म के कुछ समय पश्चात महाराज विश्वनाथ की दूसरी रानी ने भी एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम ''चक्रायुध'' था। (यह तीर्थंकर गणधर की जोड़ी है) भगवान श्रीशांतिनाथ और चक्रायुध दोनों युवा हुए तो महाराज विश्वसेन ने अनेक उत्तम गुणवती राजकन्याओं के साथ उनके विवाह किये।

एक लाख वर्ष की आयु वाले राजकुमार शांतिनाथ जब 25000 वर्ष के हुए तो महाराज विश्वसेन ने उनका राज्याभिषेक कर उन्हें हस्तिनापुर का साम्राज्य सौंप दिया और चक्रायुध कुमार को युवराज पद दे दिया। स्वयं महाराज विश्वसेन ने आत्मशुद्धार्थ मुनिव्रत स्वीकार किया।

जब महाराज श्रीशांतिनाथ को राज्य संचालन करते करते 25000 वर्ष बीते तब उनके शस्त्रागार में चक्रवती पद का सूचक सुदर्शन चक्र प्रकट हुआ। साथ ही दैवी क्षत्र, कृपाण, राजदंड, काकिनी, चर्म तथा चूड़मणि ऐसे कुल 7 अजीव रत्न प्राप्त हुए। तदोपरांत उनके महान पुण्योदय से विशेष पुरोहित, रथपति, सेनापति और गृहपति हस्तिनापुर में उत्पन्न हुए। छः खांड में श्रेष्ठ ऐसा कन्या रत्न, गज रत्न तथा अश्व रत्न विजयार्द्ध पर्वत में उत्पन्न हुए और विद्याधर भक्तिपूर्वक उन्हें भेंट दे गए। तदोपरांत उस पुण्यकाल में समुद्र एवं सरिताओं के संगम के निकट नौ महानिधियां प्रकट हुई। उन्हें लाकर देवों ने महाराज श्रीशांतिनाथ को भेंट कर दी। इन्हीं सभी के प्रभाव से 800 वर्षो में भगवान श्रीशांतिनाथ ने शटखंड पृथ्वी को जीतकर संपूर्ण भारत पर 25000 वर्षो तक पंचम चक्रवर्ती पद से शासन किया।

दीक्षा और पारणाः- महाराज श्रीशांतिनाथ के 75000 वर्ष पूरे होने पर राज्य में उनका जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। महाराज श्रीशांतिनाथ दरबार में जाने के लिये दर्पण में अपना मुंह देख रहे हैं। दर्पण में उनका सुंदर मुख दिखाई दिया और दूसरे क्षण बदला हुआ मुख दिखाई दिया। उन्हें पूर्व भव का जाति स्मरण होते ही वे वैराग्य का विचार करने लगे और चक्री दीक्षा लेने को तैयार हो गए। उन्होंने लोकांतिक देवों से प्रेरित होकर वर्ष भर याचकों को इच्छानुसार दान दिया और 1000 राजाओं के साथ ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दर्शी को भरणी नक्षत्र में दीथार्थी निष्क्रमण किया। देव, मानव व्रंद से घिरे हुए प्रभु सहस्रनाम वन में पहुंचे और वहां सिद्धों की साक्षी से संपूर्ण पापों का परित्याग कर दीक्षा ग्रहण की। वे 16 वर्ष तक मौन साधना करते हुए और मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ते हुए एक बार पुनः हस्तीनापुरी के सहस्त्र आम्रवन में पधारे।

केवल ज्ञानः- यहां आपने शुक्ल ध्यान से संपूर्ण घाती कर्मो का क्षय किया और पोष शुक्ला नवमी को धरणी नक्षत्र में केवल ज्ञान और केवल दर्शन की प्राप्ति की।

समस्त घाती रुपी ''अरि'' को एक साथ ''हन कर '' प्रभु ''अरिहंत'' हुए। केवली होकर प्रभु ने देव, मानवों की विशाल सभा में धर्म देशना देते हुए समझाया, संसार में सारभूत शट (6) द्रव्यों में आत्मा ही सर्वोच्च और प्रमुख है।

यह आत्मतत्व स्वयं स्वतंत्र सत है। वह अनादि अनंत अपने उत्पाद, व्यव, ध्रोव्य स्वरुप में वर्तने वाला है। ज्ञान और आनंद उसका मुख्य स्वभाव है। जिस कार्य में आत्मा का उत्थान हो वही उत्तम और श्रेयस्कर है।

धर्म देशना सुनकर अनेक जीव आत्मज्ञान को प्राप्त हुए। अनेक जीवों ने श्रावक और मुनि धर्म ग्रहण किया। चतुर्विद्ध संघ की स्थापना कर प्रभु 16 वें भाव तीर्थंकर कहलाए।

धर्म परिवारः- भगवान श्रीशांतिनाथजी का धर्म परिवार निम्नानुसार थाः-

1- गण और गणधर 36 (आवश्यक निरयुक्ति के अनुसार) 90, (समवाय 9 के अनुसार) 2- केवली 4300, 3- मनः पर्याय ज्ञानी 4000, 4- अवधिज्ञानी 3000, 5- चौदह पूर्वधारी 800 (श्रुत केवली), 6- वैक्रिय लब्धिधारी 6000, 7- वादी (वाद विद्या निपुण मुनिवर) 2400, 8- साधु 62000, 9- साध्वी 61600, 10- श्रावक 290000, 11- श्राविका 393000,

(इस जानकारी का स्त्रोतः- जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग 1, द्वारा आचार्य हस्तीमलजी महाराज)

परि निर्वाणः- भगवान श्रीशांतिनाथ तीर्थंकर पद पर 25000 वर्ष रहे। लाखों लोगों को कल्याण का मार्ग बताया। जब उनकी आयु एक मास शेष रही तो वे सम्मेद शिखरजी पर आकर स्थिर हुए। 900 साधुओं के साथ उन्होंने एक माह का उपवास किया और ज्येष्ठ कृष्णा त्रयोदशी को भरणी नक्षत्र में चार अघाती कर्मो का क्षय कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होकर सिद्ध पद प्राप्त किया। आप अशरीरी हुए। कर्म रहित हुए। विभाव रहित हुए। पूर्ण शुद्ध स्वभावरुप परिणमित हुए। वे अनादि संसार तत्व को छोड़कर स्वयं अभूतपूर्व मोक्ष तत्व हो गए और सिद्धालय में जाकर विराजमान हुए।

मोक्षगामी महापुरुषों के मंगल जीवन का चिंतन सर्वजीवों को शांति प्रदान करें। सर्वजीवों का कल्याण करें। सर्वत्र मंगल हो। ॐ शांति, शांति, शांति, जय जिनेन्द्र ! (शास्त्र विरुद्ध या प्रचलित मान्यताओं के विपरित कुछ उल्लेख किया हो तो मिच्छामी दुक्कड्डम)

❊ Delete जितनी तेजी से होता है उतनी तेजी से Downlod नहीं होता क्योंकि सर्जन में समय लगता है और विसर्जन में नहीं फिर चाहे वह APPLICATION हो या रिश्ते।

जैन दर्शन में कालचक्र का विभाजन - प्रयोग और उपयोग

डॉ. सुभाष जैन

काल का प्रवाह अनंत और अजस्त्र है। वह अनादिकाल से परिवर्तित होता रहा है और अनंतकाल तक परिवर्तित होता रहेगा। कभी वह उन्नत दिखाई देता है तो कभी अवनत। यह उत्थान और पतन का क्रम भी अनवरत ही चलता रहता है। उत्थान के बाद पतन और पतन के बाद उत्थान होता रहता है और इस तरह से काल यात्रा आगे बढ़ती रहती है। कालचक्र की यह यात्रा, गतिशीलता सदा अबाधित रहती है। घड़ी के कांटों की गति से कालचक्र को बड़ी ही सुगमता से समझा जा सकता है। घड़ी की सुईयाँ जब बारह अंक से आगे यात्रा करती है तो पतनोन्मुख हो जाती है। अधोगति के साथ जब तक छ: के अंक पर नहीं पहुंच पाती है तब तक उनकी यात्रा नीचे की ओर बनी रहती है। छ: के अंक पर पहुंचते ही वे उर्ध्वगामी हो जाती है और विकास की पराकाष्ठा बारह के अंक पर पहुंच जाती है। बाद में पुन: पतन या पुन: अधोगति हो जाती है। कालचक्र की उत्थान से पतन और पतन से उत्थान की ओर गतिमयता इसी प्रकार बनी रहती है। मानव जाति का संस्कारगत विकास और ह्रास का क्रम भी घड़ी के इन कांटों की भांति चलता रहता है।

जैन दर्शन और तत्व विद्या में कालचक्र का जितना सूक्ष्म आंकलन किया गया है वैसे कहीं देखने को नहीं मिलता है। काल का सूक्ष्म से सूक्ष्म विभाजन कर उसके अनुप्रयोग विभिन्न प्रकार से किये गये है। यहीं नहीं काल के प्रभाव को भी जैन दर्शन प्रदर्शित किया गया है। काल के प्रभाव के अनुसार ही संसार में घटनाएं घटित होती है।

आगम शास्त्र स्थानांग सूत्र, चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति में काल के प्रभाव का उपयोग कर उस काल की स्थिति वर्णन किया गया है। जो जैन दर्शन के अलावा कहीं नहीं मिलता है, **कुरान और बाईबिल में इतना सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया जा सका है उसका एक मात्र कारण है कि कुरान और बाईबिल के लेखक कालचक्र के सूक्ष्म गणित से अनभिज्ञ थे।** कई बार कुरान में अनेक बातों का पुर्नउपयोग हुआ है वैसा जैन शास्त्रों में नहीं किया गया है, कालचक्र का जो विभाजन जैन दर्शन में हुआ है उसका प्रभाव और उपयोग काल विशेष में कैसा होगा ? यह भी वर्णित किया गया है।

जैन दर्शन के अनुसार कालचक्र अध्ययन कर हर्मन यकोबी जैसे जर्मन विद्वान ने भी आगम शास्त्रों की सत्यता को प्रमाणित किया था, प्रस्तुत आलेख की विषय वस्तु कालचक्र के महत्व और उसका उपयोग वर्तमान सन्दर्भ कितना उपयोगी हो सकता है ? इसका अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जैन दर्शन में प्रदर्शित कालचक्र को आधुनिक युग में उपयोग कर कई वैज्ञानिक अनुसंघनों के निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है यह आज भी कितना सार्थक है इसको बतलाने का प्रयास किया गया है।

कालचक्र किसे कहते हैं ?

प्रत्येक कालचक्र के 10-10 कोटाकोटि सागरोपम प्रमाण अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी नामक दो समान भाग होते हैं। जिस काल विभाग में सुख, आयुष्य शरीर वर्णादि वस्तुओं का अवसर्पण अर्थात उनकी क्रमश: हानि होती है, उसे अवसर्पिणी काल और जिसमें उक्त वस्तुओं का उत्सर्पण अर्थात क्रमश: वृद्धि होती है उसे उत्सर्पिणी काल कहते हैं। सामान्य भाषा में हम उसे गिरता और चढ़ता काल कह सकते हैं।

अवसर्पिणी के बाद उत्सर्पिणी और उत्सर्पिणी के बाद अवसर्पिणी, इस तरह यह क्रम चक्र की भांति ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर जाने वाला होने से उसका "कालचक्र" नाम सार्थक है।

अवसर्पिणी काल के आरंभ से लेकर उत्सर्पिणी की समाप्ति तक काल का एक चक्र सम्पन्न हो जाता है। यही कालचक्र है। उत्थान से पतन का तथा पतन से उत्थान का यह क्रम सतत बना रहता है। यही समय की परिवर्तनशीलता है। कालचक्र सतत गतिशील है और उसमें परिवर्तन (कभी उत्थान कभी पतन) सदा स्थान लेता रहता है। यह परिवर्तन तत्काल हमारे अनुभव में नहीं आता। जब परिवर्तित परिस्थिति काफी आगे बढ़ जाती है, विकसित हो जाती है, तभी हमें उसका आभास होता है।

इस प्रकार कालचक्र उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी इन दो विभागों में विभक्त है। दोनों के छह-छह उपविभाग है। यहां घड़ी का उदाहरण और भी उपयुक्त है। घड़ी में बारह से छह अंक तक का विभाग छह उपभागों में विभक्त अवसर्पिणी काल का प्रतीक है और छह से बारह तक का भाग छह उपभागों में विभक्त उत्सर्पिणी काल का द्योतक है।

काल का स्वरुप

सूक्ष्म से सूक्ष्म (अविभाज्य) काल- एक समय

असंख्यात समय- एक आवलिका

256 आवलिका- एक क्षुल्लकभव (निगोद का जीव इतने समय में एक भव पूरा करता है)

17 से अधिक क्षुल्लकभव- एक श्वासोश्वास (स्वस्थ युवान का प्राण)

7 श्वासोश्वास- एक स्तोक

7 स्तोक-एक लव

77 लव- एक मुहूर्त

3773 श्वासोश्वास- एक मुहूर्त

48 मिनिट- एक मुहूर्त

2 घड़ी- एक मुहूर्त

65536 क्षुल्लकभव- एक मुहूर्त

1,67,77,216 आवलिक- एक मुहूर्त

30 मुहूर्त- एक अहोरात्र

15 अहोरात्र- एक पक्ष
2 पक्ष- एक मास
2 मास- एक ऋतु
6 मास- एक अयन
12 मास- एक वर्ष
5 वर्ष- एक युग
84 लाख वर्ष- एक पूर्वांग
84 लाख पूर्वांग- एक पूर्व
70560 अरब वर्ष- एक पूर्व
असंख्य वर्ष- एक पल्योपम
10 कोटाकोटि (करोड़Xकरोड़) पल्योपम- एक सागरोपम
10 कोटा कोटि सागरोपम- एक उत्सर्पिणी / अवसर्पिणी
20 कोटा-कोटि सागरोपम- एक कालचक्र
अन्नत कालचक्र- एक पुद्गल परावर्त
अन्नत पुद्गल परावर्त काल- भूतकाल
भूतकाल से अन्नत गुण- भविष्य काल
एक समय- वर्तमान काल

भूत,भविष्य वर्तमान काल- श्रद्धाकाल,सर्व अद्धाकाल

काल का स्वरुप

अन्तमुहूर्त (तीन प्रकार) :-

1- जघन्य अन्तर्मुहूं - 9 समय का काल

2- मध्यम अन्तमुहूर्त- 10 समय से मुहूर्त के अन्तिम समय के पहले का एक समय तक का काल।

3- उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त :- मुहूर्त में मात्र एक समय शेष रहे वैसा काल।

पल्योपम की पहिचान- पलय+उपमा=पल्योपम, पल्स=कुंआ। जिन्हें कुए की उपमा हो वह पल्योपम ।

उदाहरणार्थ- एक योजन (4 कोस) लम्बा, एक योजन चौड़ा, एक योजन गहरा कुआ हो जिसमें 7 दिन के युगलिक मनुष्य के बालों को छोटे-छोटे असंख्य टुकड़े काट कर कुए में दबा-दबा कर ऐसे भर दे कि उसके ऊपर से चक्रवर्ती की पूरी सेना के चलने पर ही दब न सके, इस प्रकार ठूंस-ठूंस कर भरे और फिर उसमें से प्रति सौ वर्ष में एक-एक टुकड़ा निकालते जितने वर्षों में वह कुंआ खाली हो उतने वर्षों को एक पल्योपम कहते हैं।

प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के छः विभाग होते है। उनके नाम और माप निम्न प्रकार से है-

क्रम	छः विभाग के नाम	अवसर्पिणी के छः विभाग के माप	उत्सर्पिणी के छः विभाग के माप
1-	सुषमा-सुषमा	4 कोटाकोटी सागरोपम	21 हजार वर्ष
2-	सुषमा	3 कोटाकोटी सागरोपम	21 हजार वर्ष
			42000 वर्ष न्यून
3-	सुषमा-दु:षमा	2 कोटाकोटी सागरोपम	1 कोटा कोटि सागरोपम
4-	दु:षमा-सुषमा	1 कोटाकोटी सागरोपम	2 कोटा कोटि सागरोपम
		42000 वर्ष न्यून	
5-	दुषमा	21 हजार वर्ष	3 कोटा कोटि सागरोपम
6-	दु:षमा-दुषमा	21 हजार वर्ष	4 कोटा कोटि सागरोपम

पात्र बनें

सागर कभी भी मेघ अथवा नदियों से जल की प्रार्थना नहीं करता है फिर भी मेघ बरस कर सागर को भरता रहता है। नदियां आ-आकर सागर में मिलती रहती हैं।

बस, इसी प्रकार जो पात्र बनता है, उसके पास संपत्तियां खींचकर चली आती है।

पात्र बनोगे तो सारा वैभव तुम्हारे पास स्वयं खिंचा चला आएगा। तुम्हें वैभव को पाने के लिये दौड़-धूप करने की आवश्यकता नहीं है।

यदि पात्रता नहीं है और संपत्ति प्राप्त हो गई तो वह भी लाभ के बदले नुकसान का ही काम करेगी। अपात्र को प्राप्त सत्ता, संपत्ति व अधिकार लाभ के बदले नुकसान का ही कारण बनते हैं।

पर्यावरण रक्षक जैन धर्म

* डॉ. सुभाष जैन

नाभिकीय विस्फोट से जो दृश्य उत्पन्न होगा, उससे करीब-करीब मिलता-जुलता उल्लेख जैनागम 'भगवती सूत्र' में प्राप्त होता है, यद्यपि यह वर्णन परमाणु युद्ध का नहीं है। जैनकाल गणना के अनुसार छठे काल का उल्लेख है। उस समय विश्व विचित्र स्थितियों से गुजरेगा। समवर्तक वायु चलेगी। यह वायु इतनी तीव्र गति और वेग से चलेगी कि पहाड़ भी प्रकंपित हो जाएंगे, आकाश धूल से आच्छादित हो जाएंगा। चन्द्रमा अति ठंडा एवं सूर्य के अति गर्म हो जाने से तीव्र सर्दी एवं गर्मी का वातावरण निर्मित होगा। वर्षा बीमारियां बढ़नेवाली होगी।

इस वैज्ञानिक युग में भगवती सूत्र में वर्णित बातें सत्य हो रही है। पांचवें कालखंड की अवधि इक्कीस हजार वर्ष है। इक्कीस हजार वर्ष के बाद आनेवाली स्थिति इक्कीसवीं शताब्दी में न आ जाए?

अहिंसा और संयम को जीवनशैली में अपनाकर, पर्यावरण संकट से बचा जा सकता है।

अहिंसा केवल परलौकिक ही नहीं है। वह जीवन के हर चरण के साथ जुड़ी हुई है। भगवान श्रीमहावीर प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने संसार के समस्त जीवों के छह वर्गीकरण किये-पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय में किया। पृथ्वीकाय में पत्थर, मिट्टी, विभिन्न खनिज पदार्थ आदि का समावेश होता है। अप्काय में पानी, तेजस्काय में अग्नि, वायुकाय में हवा, वनस्पतिकाय में हरियाली, पेड़-पौधे आदि तथा त्रसकाय में पशु-पक्षी, मनुष्य आदि हलन-चलन करने वाले जीवों का समावेश है। पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति के जीव एकेन्द्रिय कहलाते है। वे सूक्ष्म होते है उन्हें हम आंखों के द्वारा नहीं देख सकते।

एकेन्द्रिय जीव भी सुख-दुःख, प्रिय-अप्रिय, हर्ष-शोक आदि का संवेदन करते है। यद्यपि उनकी चेतना का विकास अत्यल्प होता है, तथापि हम उनके अस्तित्व को अस्वीकार नहीं कर सकते। उनके अस्तित्व को अस्वीकार करने का अर्थ है अपने अस्तित्व को अस्वीकार करना। पर्यावरण की सुरक्षा वही कर सकता है,जो जंगम और स्थावर, दृश्य और अदृश्य, सूक्ष्म और स्थल जीवों के अस्तित्व को स्वीकार करता है।

पानी, हवा और वनस्पति पर्यावरण-संरक्षण के प्रमुख घटक है। आज ये तीनों प्रदूषित है। पीने के लिये शुद्ध पानी नहीं है, श्वास लेने के लिये शुद्ध प्राणवायु नहीं है। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से यह नितांत अपेक्षित है कि व्यक्ति पानी के मूल्य को समझे एवं उसका दुरूपयोग बंद करें।

आम आदमी की धारणा है शरीर पर ज्यादा पानी डालने से अच्छा स्नान होता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि घर्षण से अच्छा स्नान होता है। घर की साफ-सफाई में आज पानी का बहुत ज्यादा अपव्यय हो रहा है। भूमिगत जल के अंधाधूंध दोहन के कारण पानी कम होता जा रहा है। भू-वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे है कि - आगामी 25 वर्षों में जल-संकट का सामना करना पड़ेगा, अधिक दोहन के कारण जल-स्तर नीचे जा रहा है। सीमा-लंघन का परिणाम अंततः दुःखद ही होता है।

श्वास लेने के लिये आज शुद्ध प्राणवायु (ऑक्सीजन) भी नहीं है। वायु-प्रदूषण भी एक ज्वलंत समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। पर्यावरण-संबंधी एक संस्था 'यूनेप' के एक अध्ययन के अनुसार पृथ्वी की पैदा होनेवाली कुल कॉर्बनडाई ऑक्साइड की कॉर्बन चक्र में लाने की क्षमता कम पड़ रही है। यदि कार्बनडाई ऑक्साइड के बढ़ने का यही क्रम रहा तो कुछ ही वर्षों में पृथ्वी पर इसकी मात्रा दुगनी हो जाएगी।

भगवान श्रीमहावीर ने कहा था- देखो! वनस्पति दूसरे जीवों की अपेक्षा तुम्हारे अधिक निकट है। पृथ्वी, अप, तेजस, वायु आदि के जीवों को समझना कठिन है,किन्तु वनस्पति को समझना आसान है। तुम इसे समझो, इस पर मनन करो। मनन कर अभय-दान दो।

सात लाख-

सात लाख पृथ्वीकाय, सात अप्काय, सात लाख तेउकाय सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख इंद्रिय, दो लाख त्रींद्रिय, दो लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य- इस तरह चौरासी लाख

जीव–योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव–हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, उन सब का मन–वचन–काया से मिच्छा मि दुक्कडं....1

गाथार्थ –

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख त्रींद्रिय, दो लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य–इस तरह चौरासी लाख जीव–योनि में से मेरे जीव ने जो कोई जीव–हिंसा की हो, करायी हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सभी मेरे दुष्कृत्य मन–वचन–काया से मिथ्या हों...1

जिन शासन : एक अद्भूत कंपनी

जिसका नाम है- जैन शासन
कार्यकाल- अनंत काल तक
प्रतीक चिन्ह- महामंत्र णमोकार
उत्पादन- पुण्य और मुक्ति
रॉ मटेरियल- श्रद्धा और आचरण
संस्थापक- अनन्त तीर्थंकर प्रभु
प्रतिनिधि- सुगुरु भगवंत
शाखाएं- मंदिर, पाठशाला
साधना- अंतर बाह्य तपादि बारह वाहन शुभ और शुक्ल ध्यान नामक दो चालक, दान, तप, शील, भावनादि चार अश्व
सत्मार्ग- सम्यक दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि रत्नत्रय धर्म
नियमावली व मार्गदर्शक- आगम और शास्त्र
उपभोक्ता- समस्त संसारी जीव राशि
क्रमिक विकास- निगोद से निर्वाण
विशेषता- चारों गति के जीव इसके उपभोव ता है

विस्तारक- इसके प्रतिनिधि उपभोक्ता को कहीं भी, कभी भी हर हाल में इस कंपनी के उत्पादन उपलब्ध करवा सकते है, इसकी उत्पादन गुणवत्ता मौलिक और अद्वित्तीय है जिनके सहारे अब तक अनंत उपभोक्ता परम सुख को प्राप्त कर चुके है, यह कंपनी उपभोक्ता से रॉ मटेरियल, श्रद्धा के आचरण के रुप में स्वीकारती है व बदले में अपना उत्पादन पुण्य और मुक्ति के रुप में उसे देती है।

श्रद्धा और आचरण इसमें विनियोजित करने से शीर्ष स्थान पर पहुंचा जाता है, निगोद से निर्वाण का सफर पूर्ण कर एक नाग नागिन धरणेंद्र पद्मावती देव पद की प्राप्ति करते हैं, रावण और कृष्ण, श्रेणिक भी अरिहंत पद प्राप्त कर लेते है, राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के पुत्र वर्धमान के रुप में जन्मा अपनी 72 वर्ष की उम्र में उसने अपनी संपूर्ण पूंजी आचरण के रुप में निवेश की व जिनशासन के शीर्ष पद सर्वज्ञता को प्राप्त कर इसके शासनपति हुए, जिन्हें हम भगवान श्री महावीर के रुप में जानते है और मानते है। **उद्देश्य-** अब हम सब इस कंपनी की विशेषता, लाभ कार्य प्रणाली और विश्वसनियता से परिपूर्ण परिचित हो चुके है, आओ आज तक हमने अपनी श्रद्धा और आचरण रुपी पूंजी का जो निवेश किया है उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए, इस संसार से तैरते हुए शीघ्र मोक्ष पद प्राप्ति का लक्ष्य रखे, भावना भव नाशिनी।

आचार्य श्रीमद् मानदेवसूरीश्वरजी महाराज साहेब

''जैन समाज में अति प्रसिद्ध महामंगलकारी लघु शांति (छोटी शांति) एवं महाप्रभावक तिजयपुहत्त स्तोत्र के रचायिता वीर शासन परम्परा के 19 वें पट्ट्प्रभावक आचार्य मानदेव सूरीजी अत्यंत विद्वान तथा तपस्वी विभूति थे। चतुर्विध संघ के संरक्षक तथा संवर्द्धन हेतु उन्होंने अनेक कार्य किये तथा जिनशासन की दिग्-दिगन्त प्रभावना की।''

जन्म एवं दीक्षाः-

नाडोल (राज.) नगर में धनेश्वर (जिनदत्त) नाम का प्रख्यात श्रेष्ठी रहता था। उसकी धर्मपत्नी का नाम धारिणी था। दोनों के सद्ग्रहस्थ से उन्हें एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। बालक अत्यन्त रुपवान था। उसका नाम ''मानदेव'' रखा गया। चन्द्रमा की 16 कलाओं की भांति पुत्र की कलाएं दिन प्रतिदिन निखरती रही।

विहार करते-करते आचार्य प्रद्योतनसूरीजी नाडोल नगर में पधारे। उनके कुछ दिन की स्थिरता में उनके द्वारा बरसाए जिनवाणी के प्रवचन रुपी मोतियों से मानदेव को भी मोक्ष मार्ग के पथ पर चलने हेतु सर्वविरति धर्म की अभिलाषा हुई। माता-पिता ने किसी तरह अपने हृदय को वश में कर मानदेव का ज्ञानगर्भित वैराग्य देख दीक्षा की आज्ञा दी। शुभ मुर्हूत में आचार्य प्रद्योतनसूरीजी की परम तारक निश्रा में बालक की प्रवज्या सम्पन्न हुई।

शासन प्रभावनाः-

मुनि मानदेव की स्मरणशक्ति अपूर्व थी। अल्प समय में ही गुरुनिश्रा में रहकर उन्होंने 11 अंगों को, छेद सूत्रों आदि का गहन अध्ययन किया। अपने शिष्यों को हर कसौटी पर खरा मानकर आचार्य प्रद्योतनसूरीजी ने उन्हें आचार्य पद प्रदान किया तथा वे आचार्य मानदेवसूरि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उनके सूरिपद प्रदान महोत्सव के समय सरस्वती और लक्ष्मी नामक दो देवियाँ साक्षात् उनके कंधों पर प्रकट हुई। संपूर्ण जनमानस में आचार्य मानदेवसूरीजी की विद्वता एवं ऋद्धि का हर्षोल्लास पूर्वक प्रचार हुआ किन्तु यह दृश्य देखकर उनके सद्गुरु आचार्य प्रद्योतनसूरीजी को उनकी आत्मा की चिन्ता हुई। इस ऋद्धि से मानदेव चारित्र से भ्रष्ट हो जाएगा। ऐसे दुर्विचार से प्रद्योतनसूरीजी खिन्न रहने लगे। आचार्य मानदेव भी बुद्धिमान थे। अपने गुरु की मनोवेदना वे समझ गए। अपने गुरु को चित्त शांति के लिए उन्होंने उनके आगे ऐसा नियम लिया कि **''भक्ति वाले गृहस्थ के घर की भिक्षा नहीं लूंगा। अज्ञात कुल की ही गोचरी लूंगा एवं दूध, दही, घी, मीठा, तेल, इत्यादि विगयों का आजीवन त्याग करुंगा।** प्रद्योतनसूरीजी को आ.मानदेवसूरीजी के इस निर्णय पर बहुत प्रसन्नता हुई एवं वे उनके निरतिचार संयम को लेकर आश्वस्त हुए।

आ. मानदेवसूरीजी के विशुद्ध तप एवं उत्कृष्ट संयम के प्रभाव से 1- पद्मा, 2- जया, 3- विजया, 4- अपराजिता ये चार देवीयां उनके सानिध्य में रहती थी एवं प्रतिदिन उनको वन्दना करने आती थी। धीरे-धीरे उनकी प्रसिद्धि सर्वत्र हो गई।

उन्होंने सिंध तथा पंजाब प्रदेश में भी विहार किया। उच्च नगर (तक्षशिला का एक क्षेत्र) देराउल, मारवाड़ इत्यादि क्षेत्रों में विचरण कर सांठा राजपूतों को प्रतिबोध देकर उन्हें ओसवाल जैन बनाया। मानदेवसूरीजी ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र युक्त संयम से धर्म की महती प्रभावना की एवं ''जैनम् जयति शासनम्'' का सर्वत्र उद्घोष कराया।

लघु शांति की रचनाः-

पंजाब की सरहद पर तक्षशिला नामक नगरी थी। वह जैन संस्कृति का बहुत बड़ा केन्द्र था। वहां जैनों के 500 मंदिर तथा लाखों जैन परिवार बसे थे। सदैव परिस्थितियां एक जैसी नहीं रहती। तक्षशिला जैसी सुंदर नगरी में ''मरकी'' का उपद्रव हो गया। इस व्याधि के कारण हजारों मनुष्यों की मृत्यु हो गई। दिन-प्रतिदिन लाशों का ढेर बढ़ता जा रहा था।

ऐसे विषम संकट के समय तक्षशिला के जैन संघ ने मंदिर में इकट्ठे होकर विचार चर्चा की। उन्होंने चिंतन किया कि सुख-शांति-अनुष्ठान पर्वो के दिनों में देव देवियां दर्शन भी देते हैं पर आज इस महान संकट के समय में मंदिरों व मनुष्यों के निष्कारण संहार के अवसर पर सब देव-देवी कहां चले गये ? समूचे श्री संघ के इस संताप के प्रभाव से शासनदेवी अदृश्य रुप में प्रकट हुई और बोली आप इस प्रकार खेद क्यों करते हो ?

इसमें शासन देव-देवी का कोई दोष नहीं। दुष्टम्लेच्छो के देवों ने मरकी रोग के उपद्रव को जन्म दिया है उसके सामने हमारी कुछ नहीं चल सकती है। वैसे भी तीन वर्षो के

बाद तुर्कियों द्वारा इस तक्षशिला नगरी का पतन-भंग होगा। तब तक यदि इस तक्षशिला के मंदिरों व मनुष्यों का रक्षण करना है तो नाडोल में विराज रहे आचार्य मानदेवसूरीजी को तक्षशिला में लाने का प्रयत्न करो। उनके तप का ऐसा प्रभाव है कि कैसा भी उपद्रव क्यों न हो, उनके पधारने से सब शान्त हो जाता है किन्तु ध्यान रहे तीन साल बाद इस नगरी का ध्वंस निश्चित है। तब तक लोग अन्यत्र चले जाएँ। इत्यादि कहकर शासनदेवी तो अदृश्य हो गई। समूचे संघ में मंथन चालू हुआ।

समय की पुकार यही थी कि वर्तमान में मरकी रोग को दूर कर प्राण सुरक्षित किये जाए। अतः आचार्य मानदेव सूरीश्वरजी को तक्षशिला बुलाने पर विचार किया किंतु ऐसी विकट परिस्थिति में कोई घर कुटुम्ब को छोड़ जाने को तैयार न हुआ। अंतः यह जिम्मेदारी वीरदत्त नाम के श्रावक ने स्वीकार की तथा संघ का विनतीपत्र लेकर वह चल पड़ा।

वीरदत्त श्रावक नारदपुरी (नाडोल) पहुंचा। मानदेव सूरीजी के दर्शनाथ विनती पत्र लेकर उसने उपाश्रय में प्रवेश किया। इस समय आ.मानदेवसूरीजी पर्यकासन लगाकर नाक के अग्रभाग के ऊपर दृष्टिस्थापित कर ध्यान अवस्था में लीन थे। उस समय जया और विजया नाम की 2 देवियां आचार्यश्री को वंदन करने आई थी किन्तु उनका ध्यान अस्खलित रहे, इस भावना से कोने में बैठी रही। यह दृश्य देखकर वीरदत्त का मन संकल्पों विकल्पों से भर गया। शंका और संदेह से उसने विचार किया एक तो मध्यान्ह का समय, ऊपर से दो रुपवती अतिसुंदर स्त्रियां साधु के पास एकान्त में बैठी हैं। अवश्य ही इनका ध्यान भी ढोंग है क्या ऐसे व्यभिचारी आचार्य से कभी उपद्रव शान्त हो सकता है ? शासनदेवी ने निश्चित हमसे छल अथवा मजाक किया है। बाहर बैठकर वह ऐसे कुविकल्प चिंतन करने लगा।

जैसे ही मानदेवसूरीजी ने अपना ध्यान पारा, वीरदत्त ने अंदर आते-आते अवज्ञा-आशातना-अविनयपूर्वक गुरुदेव का वंदन किया। उन्हें आभास हो गया कि इस श्रावक ने हम देवियों के आगमन को गलत समझा है और वह आचार्यश्री के संयम पर संदेह कर रहा है। उसके दुर्भावों का आभास होते ही देवियां क्रोधित हो गई।

जयादेवी ने उसे सबक सिखाने के लिये जकड़ कर बांध लिया और कहने लगी- दुष्ट ! तुझे दिखता नहीं हमारे पैर भूमि से 4 अगुल ऊपर है। हमारे नेत्रों की पलकें नहीं झपकती। हमारे गले की पुष्पमाला विकसित है। हम मनुष्य नहीं, देवांगनाएं हैं। गुरु भक्ति से प्रेरित होकर हमेशा वंदन करने आया करती हैं। ऐसे महाप्रभावक बालब्रह्मचारी विद्वान आचार्य के शील व संयम के विषय में ऐसे दुष्ट विचार लाना तुम्हारी विवेकशून्यता है। यह खबर सुनकर वीरदत्त श्रावक बहुत शर्मिन्दा हुआ। अपने दुर्भाव व दुर्व्यवहार के लिये उसे बेहद पश्चाताप हुआ। उसने सभी से क्षमायाचना की। मानदेव सूरीजी के कहने पर देवी ने उसे बंधन मुक्त किया।

तत्पश्चात वीरदत्त ने तक्षशिला नगरी का बुरा हाल बताते हुए वहां पधारने की विनंती की एवं श्रीसंघ का निवेदन पत्र भी मानदेवसूरिजी को सौंपा। आचार्यश्री ने कहा- संघ सर्वोपरि है। संघ की आज्ञा पालन करना मेरा कर्त्तव्य है परन्तु कुछ कारणवश इस समय तो मेरा तक्षशिला आना संभव नहीं हो पाएगा किंतु संघ का संरक्षण मेरा अभिन्न दायित्व है। मैं यहां बैठा ही तुम्हारे उपद्रव की शांति करने का पूर्णतः प्रयत्न करुंगा।

अतः विशिष्टशक्तिशाली मंत्राक्षरों से युक्त लघु शांति स्वरुप ''शांति स्तव'' रचा तथा उसकी आराधना की संपूर्ण विधि वीरदत्त श्रावक को बताई। गुरु महाराज का दिया हुआ शांतिस्तव लेकर पुनः तक्षशिला चला गया। गुरु द्वारा बताई गई विधि से शांति स्तव का पाठ करने से संघ में हर्षोल्लास का माहौल छा गया। नगर में सर्वत्र शांति हो गई। जो उपचारहीन बताया जा रहा था, ऐसे मरकी रोग का लघुशांति द्वारा निवारण हुआ एवं लाखों के प्राण सुरक्षित हुए।

जैन एवं जेनेत्तर सब लोगों ने आचार्य मानदेवसूरीजी एवं जैन धर्म का महान उपकार समझा। जब माहौल सामान्य हुआ तथा सभी को जीवनदान मिलने की अनुभूति हुई, तब उन्हें शासनदेवी की तक्षशिला भंग की चेतावनी का ध्यान आया। धीरे-धीरे लोगों ने वहां से निकलना चालू कर दिया। जितनी हो सकी, जिनप्रतिमाओं को उन्होंने सुरक्षित स्थानों पर भिजवा दिया। तीन वर्षो के बाद तुर्की ने तक्षशिला पर आक्रमण कर वहां के मनुष्यों के संहार एवं संस्कृति के ध्वंस द्वारा तक्षशिला जैसी सम्पन्न नगरी को भंग कर दिया। अनेकों जिनमंदिरों की इस प्रकरण में क्षति हुई। उसके कई अरसों बाद बादशाह गजनी ने तक्षशिला का पुनरुद्धार किया तथा उसका नया नाम ''गजनी'' रख दिया।

लघु शांति में श्री शांतिनाथ भगवान श्री पार्श्वनाथ भगवान

एवं जया विजया देवी की स्तुति की गई है। स्तोत्र के अनुसार इसका पाठ करने से जल, अग्नि, विष, सर्प, राजा, दुष्टग्रह, रोग एवं युद्ध का भय तथा राक्षस शत्रुसमूह महामारी, चोर, पशु, शिकारी, भूत, पिशाच व डाकनियों का उपद्रव शांत होता है।

''ॐ नमो नमो ह्रौं ह्रीं ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् (फट्-फट्) स्वाहा''

मंत्र भी प्रयोग किया हैं। अंतिम गाथा में अपना नामोल्लेख करते हुए वे लिखते-

''यश्चैनं पठति सदा, श्रृणोति भावयति वा यथायोगम् ।''

''स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्री मानदेवश्च ॥''

लघु शांति की तरह शाकंभरी नगरी में शाकिनी व्यंतरी के उपद्रव को शांत करने के लिए उन्होंने प्रसिद्ध **''तिजयपहुत्त''** स्तोत्र की रचना की। तिजयपहुत्त स्त्रोत में 170 तीर्थंकर परमात्माओं की स्तवना है। यह 14 गाथाओं का है। स्तोत्र के पाठ-

''ॐ ह र हुं हः स र सुं सः ह र हुं हः''

के आधार पर ही महाप्रभावक सर्वतोभद्र यंत्र की संरचना की गई है।

कालधर्मः-

जिनशासन की महत्ती प्रभावना करते हुए मानतुंगसूरीजी को अपने पाट पर स्थापित कर उन्होंने गिरनार पर्वत पर जिनकल्प सदृश संलेखनापूर्वक अनशन स्वीकार किया। वि.सं. 261 (वीर निर्वाण 731) में गिरनार तीर्थ पर वे स्वर्गवासी बने।

✻ कैसे अद्भूत भगवान हमें मिले हैं। जगत में लाखों, करोड़ों, अरबों मनुष्यों को जो नहीं मिले वे हमें मिले हैं। ऐसा अहोभाव कायम रहे तो प्रभु के प्रति भक्ति प्रकट हुए बिना नहीं रहेगी।

ऐसा ही भक्त ही प्रभु के समक्ष कहता है-

''सेवणा आभवमखंडा.... भवे भवे तुम्ह चलणाणं'' मुझे सद्गुरु की सेवा और भगवान के चरणों की सेवा भवो भव प्राप्त हो।

सुगुरु आदि सामग्री प्राप्त कराने वाले भी भगवान ही है। भगवान के साथ यदि प्रेम जुड़ गया तो अपनी गुण-संपत्ति साथ चलेगी।

इरियावहिया सूत्र में 10 प्रकार से जीवों की हिंसा होती है वो बताया है

अभिहिया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघटिटया, परियाविया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं, संकामिया।

✻ जीवों के 563 भेद है और 563 भेदों की 10 प्रकार से हिंसा होती है।

इसलिये

563X10=5630

✻ अब ये हिंसा राग या द्वेष के कारण करते है इसलिए-

5630X2=11,260

✻ मन, वचन, काया से हिंसा करते है इसलिए-

11,260X3=33,780

✻ करण, करावण, अनुमोदना तीन तरीके से हिंसा का पाप लगता है-

33,780X3=1,01,340

✻ भूतकाल, भविष्यकाल, वर्तमानकाल में की गई हिंसा-

1,01,340X3=3,04,020

✻ अरिहंत, सिद्ध, साधु, देव, गुरु, आत्मा की साक्षी में की गई हिंसा-

3,04,020 X6= 18,24,120

✻ ऐसे इरियावहिया सूत्र में 18,24,120 प्रकार से मिच्छामि दुक्कड्म दिया जाता है।

✻ एक इरियावहिया सूत्र की ताकात है मोक्ष देने की।

✻ अइमुत्ता मुनि ने इरियावहिया सूत्र बोलते बोलते केवलज्ञान प्राप्त किया था वही इरियावहिया सूत्र हमें मिला है।

✻ हमें इस काल में मोक्ष ना मिले पर,भावपूर्वक इरियावहिया सूत्र बोलने से हमारे बहुत कर्मो की निर्जरा होती है और हम मोक्ष की ओर आगे बढ़ते है।

संयम जीवन का मार्ग, उपधान तप

हमारे आगम ग्रंथों में तीर्थंकर परमात्मा ने कहा है कि- उपधान तप दुष्कर्मों का नाश करता है। यह संसार सागर तराने के लिये नाव के समान है, दुर्वासना को जलाकर उनका नाश करता है और सबसे प्रमुख बात जो है वह यह कि उप श्री वीतराग प्रभु भाषित सूत्रों के अधिकार अर्पण करने में योगदान प्रदान करता है। इसलिये निर्मल ध्यान रुप दीपक उपधान तप सदाकरणीय, सेवनीय है।

जिस प्रकार साधु भगवंतों के सूत्र सिद्धांतों की योग्यता प्राप्त करने के लिये योगद्वहान क्रिया करने का तीर्थंकर परमात्मा ने सूत्रों में कहा है उसी प्रकार देववंदन में आनेवाले सूत्रों के लिये श्रावकों को उपधान तपाराधना वहन करने को कहा गया है उपधान करने के बाद ही नवकार मंत्र से लेकर देववंदन सूत्र बोलने की योग्यता श्रावक-श्राविकाओं को प्राप्त होती है।

उपधान के छः विभाग :-

प्रथम उपधान- पंचमंगल महाश्रुत स्कंध (नवकार) दिन 18 है।

द्वितीय उपधान- प्रतिक्रमण श्रुतस्कंध (इरियावही, तस्सउत्तरी) दिन 18।

तृतीय उपधान- शकरस्तवा व्ययन (नमुत्थुण) दिन 35 ।

चौथा उपधान- चैत्य स्तवाध्ययन (अरिहंत चेईयाणां अन्नथ उससिएण) दिन 4।

पांचवां उपधान- नामस्तवाध्ययन (लोगस्स) दिन 28।

छठा उपधान-श्रुत स्तवसिद्धस्तवाध्ययन (पुक्खरवरदी सिद्धाणं बुद्धाणं) दिन 7।

इस तरह संपूर्ण उपधान 110 दिन का होता है, माला का 47 दिन का, 35 दिन का और 28 दिन का इस तरह तीन दिन में पूर्ण होता है। तीसरा और पांचवां उपधान बाकी रखकर बाकी के चार उपधान 47 दिन में आराधना माल पहनाने में आती है।

1- उपधान तप में होने वाली आराधना- श्री उपधान वहन करनेवालों को (1) 47 दिन का पौषध में साधु जीवन अस्वाद। 21 उपवास, 11 आयंबिल, 15 निवि का तप,

2- एक लाख नवकार मंत्र।

3- आठ हजार लोगस्स।

4- नव हजार खमासमण।

5- बारह सौ मोटा देववंदन।

6- डेढ़ हजार शक्रस्तव।

7- छः सौ छोटे-मोटे देववन्दन।

पाप विचार का प्रभाव

आड़े और सीधे तंतुओं से कपड़ा बनता है उसी तरह अनुकूलता और प्रतिकूलता से जीवन बनता है। सुख और दुःख से जीवन बनता है।

सुख से दुःख, अनुकूलता से प्रतिकूलता प्रायः हमारे जीवन में ज्यादा होते है, फिर भी हमारी इच्छा तो सुख की ही होती है। अनुकूलता कैसे मिले ? यही हमारा लक्ष्य होता है, रात-दिन हमारे विचारों का चक्र चलता है, उसका केन्द्र एक ही होता है कि दुःख का नाश कैसे हो ? सुख कैसे प्राप्त हो ? अगर यह आत्मसुख की विचारधारा हो तो अच्छा, लेकिन हम तो आत्मा को स्वप्न में भी याद नहीं करते है। हमारे केन्द्र में शरीर रहा हुआ है, अहंकार रहा हुआ है उसके आस-पास हमारे सुख की कल्पना खेल खेल रही है।

उमास्वाति महाराज कहते है कि दुःख के द्वेषी, सुख के इच्छुक, गुण-दोष को नहीं देखनेवाले-अविवेकी, मोहांध जीव, जो जो प्रवृत्ति करते है उनसे दुःख और दुःख मिलते हैं। मोहांध व्यक्ति पाप के बिना दूसरा क्या विचार कर सकेगा ? पाप-विचार दुःख के अलावा क्या देगा ?

अति तीव्रता से पाप-विचार करने से हम सिर्फ अन्तमुर्हूत में कितने कर्म बांध लेते है यह जानते हो ?

3॥ करोड़ कालचक्र चले इतने कर्म सिर्फ अन्तमुर्हूत में बांध सकते है। 3॥ करोड़ कालचक्र अर्थात् कितना काल ? इतने में यहां 7 चौबीशी बीत जाती है, 70 कोड़ाकोड़ी सागरोपम होते है। मोहनीय कर्म की यह उत्कृष्ट स्थिति है। ऐसी उत्कृष्ट स्थिति जीव अगर पूरे भवचक्र में दो बार बांधनेवाला होता है तब वह ''द्विर्बंधक'' कहलाता है, और एक ही बार बांधनेवाला होता है, तब वह ''सकृदबंधक'' कहलाता है।

जैसे-जैसे मोह की पकड़ घटती जाती है, मोहांधता का नाश होता जाता है वैसे-वैसे हमारा विकास होता जाता है, अनुकूलता की आसक्ति और प्रतिकूलता का द्वेष घटता जाता है।

आगम श्रुत महाज्ञानी : मुनिपुंग डॉ.श्री दीपरत्नसागरजी

आर्ष परम्परा और मनीषा के अन्वीक्षक आख्याता, श्रमण संस्कृति के संवाहक, उदात्त चिंतक, आगम प्रभावक वाङ्मय तपस्या के केन्द्र जिन्होंने पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा के आगम श्रुत को समृद्ध किया ऐसे **महर्षि मुनिपुंग श्री दीपरत्नसागरजी महाराज** के जिन शासन दिये गये योगदान को अभिव्यक्त करने में मेरे हर शब्द ही नहीं उनकी मात्रा, बिन्दु सभी छोटे है। शब्दों में वह ताकत नहीं है जो उसे व्यक्त कर सके। अपने पिताश्री कांतिभाई को दिये यह आश्वासन को कि -आपका नाम नहीं डूबने दूंगा, पूज्य मुनिश्री ने अपनी आगम साहित्य यात्रा के द्वारा सार्थकता प्रदान की है। श्रमणत्व के ऋण को उतारने के साथ उसे जो समृद्धि आपने अपनी कलम की ताकत से प्रदान की है उसी के बल पर आपने चिन्तक ,दर्शन और साधना की ऊंचाईयों पर पहुंचकर अपनी तत्वदर्शिनी प्रज्ञा से अनेक ज्ञानदामिनी कृतियां को जिन शासन को भेंट कर जो करिश्मा कर दिखाया है वह युगों-युगों तक आपकी कीर्ति गाथा गाता रहेगा।

नैतिक लिप्साओं के प्रति आपने आंखों में मलहम पट्टी कर अपने परिवार में माता-पिता के द्वारा दिये गये ऊंचे धार्मिक संस्कारों के द्वारा अपने आपको संयम मार्ग का अनुरागी बना दिया। व्यवहारिक जिन्दगी में रेड़ियो इंजीनियर का डिप्लोमा प्राप्त करने के साथ M.Com, M.Ed और Ph.D की ऊंच शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करनेवाला व्यक्तित्व महाविद्यालय में प्राध्यापक बनकर अपने ज्ञान का विस्तार करते हुए स्वयं संयम का ज्ञानी बन जायेगा यह किसी ने सोचा नहीं था और आश्चर्यजनक रुप से **पूज्यपाद सागरानंद सूरीजी महाराजा** के समुदाय में दीक्षित होकर बहु श्रुत ज्ञानी महर्षि की अद्‌भूत आगमिक साहित्य की विरासत को आगे बढ़ाने के लिये प्राकृत ग्रंथों के अनुवादकर्ता **पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री हेमसागरसूरीजी महाराजा के मंगल आर्शीवाद स्वरुप दीक्षा मुर्हूत प्राप्त कर पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री सूर्योदयसागरसूरीजी महाराजा वरद् हस्ते रजोहरण** प्राप्त कर सागर समुदाय की शान बनेगा। पूज्यपाद **वर्तमान गच्छाधिपति जिनागम सेवी संघ स्थिवर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा** की प्रेरणा ने भी अजब काम किया कि **आगम की विरासत की रक्षा पूज्य मुनि भगवंत की साहित्य यात्रा बन गई**। श्रमण संस्कृति अनुगामी साधना के साथ साहित्य सर्जन की ओर उन्मुख सागर संत परम्परा में आपको मुनिपुंग डॉ. दीपरत्नसागरजी महाराज के नाम से जाना जाता है, उन्नत ललाट मंझला कद, चेहरे पर राजकुमारों सा सौंदर्य वाले मुनिश्री ने साधना, संयम तप-जप के दुर्घर्ष मार्ग को अपनाकर अपने साहित्यिक साधना से **विश्व ज्ञान जगत जो वारसा सौंपा उसने आपको अमरता श्रेणी में खड़ा कर दिया है, आपने चिंतन और अभिव्यक्ति की पारंगतता को प्राप्त अपनी शब्द सौष्ठवयुक्त लेखनी से जैन जगत को समृद्ध कर दिया है। साहित्य-अध्यात्म चिंतन एवं दर्शन के अध्येता पूज्य मुनिश्री आगम चक्खु है, आप लेखन और सर्जनशीलता के स्वर्णिम पृष्ठ है, आपकी प्रकाशित आगम संबंधी समस्त कृतियां बहुमूल्यवान है।** आईये आपश्री के कलम के जादू को समझाते हैः-

1- संस्कृत, प्राकृत हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी में आपने चार भाषा में साहित्य सर्जन किया है। 2- 700 पुस्तकों की रचना आपने की है। 3- तत्वार्थ सूत्र की एक डीवीडी में श्वेतांबर और दिगम्बर की चार भाषा प्राप्त, 84 कृतियों को 27,900 पृष्ठों में काम किया है। आपकी सभी साहित्य सामग्री ऑन लाईन उपलब्ध है। (www.Jaine Library.org) अपने-अपने स्तर पर भक्तामर स्त्रोत के 12 यंत्रों का निर्माण किया है, **अहमदाबाद में आगम दिवाकर और श्री महावीरपुरम् तीर्थ में श्रुत महर्षि की उपाधि से आपको अलंकृत किया गया है,** अमेरिका की Jain eLibrary के आप सलाहकार है। **175 देशों के 75000 सदस्यों के सम्पर्क में आप इन्टरनेट से जुड़े है,** चित्रलेखा पत्रिका में आपके जीवन की उपलब्धियों पर आलेख 2010 मार्च में छपा है इसके साथ ही प्रबुद्धजन में भी आपके जीवन की साहित्य यात्रा पर लेख छपा है, **यूट्यूब पर आपको अच्छी तरह से जाना समझा जा सकता है,** अनेक टीवी, पत्र-पत्रिकाओं और

समाचार पत्रों में आपके बारे में छापा गया है। ज्ञान भण्डारों के सदस्य होने के साथ आपसे चर्चा के लिये **फ्रांस, इग्लैंड से अनेक विदेशी विद्वानों ने भारत आकर चर्चा की है,** आगम शास्त्रों पर कार्य को देखते हुए आपश्री सागर समुदाय में विशिष्ट आगम ज्ञाता के रुप में आपको मान्यता प्राप्त है। 1700 पृष्ठें पर तत्वार्थ सूत्र पर आपके विवेचन पर अमेरिका की प्रौढ़ पाठशाला में चर्चा होती है, श्रावक के 36 कर्त्तव्य मन्नह जिणांण सज्झाई पर 108 व्याख्यानमाला में साधु-साध्वी ने संदर्भ के रुप में प्रयोग किया है, तीन मंदिरों का निर्माण, चार Ph.D का एवार्ड आपके निर्देशन में हुआ है, **आपकी पुस्तकों का 16 से अधिक स्थानों पर 18 आचार्यश्री की निश्रा में विमोचन हुआ है,** धार्मिक क्रिया, अनुष्ठान, प्रतिष्ठा, पूजा, अंजनशलाका विशुद्ध रुप से आपने सम्पन्न करवाई है। **आपके द्वारा रचित अभिनव हेम लघु प्रक्रिया व्याकरण को संस्कृत अकादमी द्वारा प्रथम स्थान दिया गया है,** अनेक विषयों या आपकी गहरी पकड़ है, **पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री के द्वारा रचित आगम मंजुषा को ऑन लाईन आप ही ने उपलब्ध करवाया है। श्वेतांबर परम्परा के अनुसार 45 आगम शास्त्रा को विश्व में प्रथम बार प्राकृत संस्कृत, गुजराती तीन भाषा में उपलब्ध कराने का वृहत्त कार्य आपने किया है।**

इस दुनिया में जब भी कोई इंसान पैदा होता है तो हम उसकी पहचान के लिये नामकरण कर देते है वह जिन्दगी भर फिर उसी नाम से जाना जाता है लेकिन देश दुनिया में कुछ ऐसे बिरले लोग होते है जो अपनी पहचान का पुराना चोला उतार कर फैंककर खुद की पहचान इस संसार बनाते हैं। यह करना हर इंसान की बात नहीं है, **हम मुनि श्री दीपरत्नसागर नाम के ऐसे संत के संतत्व की बात कर रहे जिन्होंने अपने कार्यो से अपनी पहचान बनाकर ज्ञान की गंगा बताई है। यही नहीं आपने श्रवण जीवन का महत्वपूर्ण योगदान तप-जप में भी विशिष्टआराधना कर अपने कर्मो की निर्जरा की है।**

108 नवकार महामंत्र का जाप विगत 15 वर्षो से निरंतर कर रहे है, रोज पक्की नवकार माला गिनते है, उवसग्गहरम् के 21 लाख जाप आपने किये जो अभी भी चालू है, लोगस्स के 3 लाख जाप, वर्धमान विद्या के 4 लाख जाप, रोज 60 माला का 21 दिवसीय अनुष्ठान, पद्मावती देवी के 31 लाख जाप विगत 8-10 वर्षो से आसोज चैत्र में सवा लाख जाप करते हैं। तप के साथ सरस्वतीदेवी की दो बार 21 दिवसीय आराधना विगत 24 वर्ष से दीपावली पर त्रिदिवसीय 1800 विद्या मंत्र की आराधना और एक लाख से अधिक चिंतामणी मंत्र का जाप आपने किया है। प्रत्येक दीपावली पर मौन आराधना करते है, 24 तीर्थकर वंदना रोज 108 बार करते है। **प्रत्येक नये शास्त्र -पुस्तक का लेखन कार्य आरंभ करने के पूर्व आप वर्धमान स्वामी आदि का 7 बार स्मरण कर कार्य आरम्भ करते हैं।**

पूज्य मुनिपुंग दीपरत्नसागरजी महाराज के अनवरत् बढ़ते हुए कदम हमेशा नवीनतम क्षितिज को छुने के लिये उत्सुक प्रतीत होते है, आपने समग्र जीवन माँ सरस्वती की आराधना समर्पित किया है, दीक्षा के बाद आपश्री को जिनवाणी जैसी माँ मिली। आपकी आराधना साधना आगे भी प्रगतिवान बने इस भाव से मेरे नमन् को स्वीकार करेंगे और अपने मंगल आर्शीवाद से मेरा मान बढ़ायेंगे इसी शुभ मंगल भाव से परमात्मा श्री वीर प्रभु आपश्री को स्वस्थ एवं दीर्घायु प्रदान करें।

क्या आप जानते है ?

✻ जे के संघवी

मन के दस दोष:-

✻ शत्रु को देखकर रोष करना। ✻ विवेक न रखना। ✻ सूत्रार्थ का चिंतन न करना। ✻ उद्वेग रखना। ✻ यशवांछा रखनी। ✻ अविनय करना। ✻ लोकोपवाद से सामायिक करना। ✻ व्यापार की चिंता करनी। ✻ सामायिक के फल में संदेह रखना। ✻ नियाणा करना।

वचन के दस दोष :-

✻ कुवचन बोचना। ✻ कलह करना। ✻ विकथा करनी। ✻ हुँ हुँ करना। ✻ सावद्य आदेश देना। ✻ अविरति का स्वागत करना। ✻ अधिक बोलना। ✻ अपशब्द बोलना। ✻ बालक को खेलाना। हँस-मजाक करना।

काया के बारह दोष:-

✻ पैर पर पैर चढ़ाना। ✻ ऊँचे आसन पर बैठना। ✻ आसन इधर-उधर फिराना। ✻ चपलता पूर्वक चारों तरफ देखना। ✻ सावद्य क्रिया की संज्ञा करना। ✻ दीवार के सहारे बैठना। ✻ आलस मरोडना। ✻ उद्भट रीति से बैठना। ✻ अंगुली मरोडना। ✻ खाज खुजालना। ✻ बैठे-बैठे नींद लेना। शीत के कारण शरीर कपड़ों से आच्छादित करना।

वर्ग पहेली क्रमांक-328

✱ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2	■	3		4	5	6	■
7		■		■	8			9
■	10			11	■		■	
12		■	13		14	■	15	
	■	16		■	17		■	
18		■	19			■	20	
	■	21	■	■		■		■
22	23		24	■		■	25	26
■	27			■		■	28	

बाएं से दाएं:-

1- नौ प्रतिवासुदेव में से एक ता--- (2)

3- श्री शांतिनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक स्थल (5)

7- बाणभट्टरचित संस्कृत का महान उपन्यास---बरी (2)

8- पुरिमताल तीर्थ केवलज्ञान स्थली है माता--- की (4)

10-नौ बलदेव में से एक---(4)

12-सहसाव---रनौर स्थित समोवशरण मंदिर में बिराजमान है श्री नेमिनाथ प्रभु (1,1)

13-जम्बुस्वामी की मोक्षस्थली है इं--- (3)

15-बारह चक्रवर्ती में से एक--- सेन (2)

16-भ.महावीर को उड़द के बाकुले वहोराते समय चंदना की आंखों में--- थे (2)

17-तेरे---खाड़ा भगवान, भगत भर दे रे झोली (2)

18-श्री जिनेश्वरदेव की हम करते है--- गौ पूजा (2)

19-परम्परा, रस्म का पर्याय---(3)

20-भावे भावना भचिए, भावे दीजे दान।
भावे---वर पूजिए, भावे केवल ज्ञान॥ (2)

22-जगतगुरु आचार्य ही---जी के दीक्षा गुरु थे आचार्य श्री विजय दान सूरिजी (4)

25-हृदय कमल उपशम बेले, बाल्या---ने रोष,
हिम दहे वन खंड ने, हृदय तिलक संतोष (2)
(नवांगी पूजा का एक दोहा)

27-सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' रचित सरस्वती वंदना का शीर्षक (3)

28- अष्टप्रकारी पूजा में प्रथम होती है--- पूजा (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-327 का परिणाम

आ	व्या	■	ज	य	मं	ग	ल	■
कं	क	■	य	■	■	ब	ड़ो	द
■	र	त्न	पु	र	■	न	■	श
क्ष	ण	■	र	क	ल	■	ज	ल
मा	■	आ	प	■	वृ	ष	■	क्ष
श्र	म	■	■	बु	द्धि	■	व	ण
म	■	र	■	■	पा	पु	री	■
ण	क	पु	र	■	र्श्व	■	ती	र
■	व	रा	पा	र्श्व	ना	■	र्थ	ङ्क

ऊपर से नीचे:-

1- राजस्थान में गोड़्वाड़ पंचतिर्थी में श्री पार्श्वप्रभु का तीर्थस्थल व---णा (2)

2- पालीताना के निकट भ.ऋषभदेव का तीर्थ---री (4)

3- आगम साहित्य के प्रथम टीकाकार, 1444 ग्रंथों के रचनाकार महान आचार्य---(6)

4- ---है तेरा तारणहारा, कब तेरा दर्शन होगा, जिनकी प्रतिमा इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा (2)

5- भगवान पार्श्वनाथ कहलाते है---दानीय (3)

6- गृह मंदिर को घ---रासर भी कहते है (1,1)

9- श्री अमर मुनि की प्रेरणा से आचार्य चंदनाजी द्वारा स्थापित जैन संस्थान (5)

11-भ.चंद्रप्रभ की केवलज्ञान स्थली चं---री (2)

14-भ.महावीर का एक भव भा--- (3,3)

21-एम जाणी ने साहिबा नेक--- मोहे जोय,
ज्ञान विमल प्रभु शुं नजर थी, ते शुं जे नवि होय (3)

23-नोबल पुरस्कार से सम्मानित भारतीय साहित्यकार क---र रवीन्द्रनाथ टैगोर (2)

24-नवांगी वृत्तिकार के रुप में जाने जाते है आचार्य अभ--- व सूरि (2)

26-सप्ताह का एक दिन मं---वार (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-328

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये वाक्य सचित है या अचित बताईये ?

1- छिलका नहीं उतारा हुआ केला।
2- नमकीन से भरा हुआ डिब्बा।
3- फ्रीज में रखा उबाला हुआ पानी।
4- मोरपंख।
5- चेनी की दाल।
6- गरम किया हुआ दही।
7- मोबाईल।
8- मरा हुआ चूहा।
9- दुध (लोकी) का गरम हलवा।
10- रुद्राक्ष की माला।
11- कच्चा पापड़ ।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-9-2022 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-327 के परिणाम

सही उत्तर-

1- राजगृही, 2- भोपावर, 3- कुंभारियाजी, 4- तेरातीर्थ, 5- तारंगा, 6- वामज, 7- भातर, 8- कदंबगिरी, 9- गिरनार, 10- हस्तगिरि, 11- संरीशा ।

नोट- वर्ग पहेली क्रमांक- 327 तथा ज्ञान-गंगोत्री क्रमांक 327 के पाठकों के नाम अगले अंक अक्टूबर माह के अंक में प्रकाशित किये जावेंगे। - सम्पादक

सहनशक्ति का रहस्य

''आप में इतनी अधिक सहनशक्ति कहां से आई ?'' ''ऊपर, नीचे और बीच में देखने से।'',''मतलब ?'' ''ऊपर देखता हूं तो मोक्ष याद आता है। नीचे देखता हूं तो धरती दिखाई देती है। और मैं सोचता हूं- मुझे कितने फीटजमीन चाहिये ? व्यर्थ झगड़े किस बात के ? और आसपास देखता हूं तो लोग दिखाई देते हैं, जो मुझसे भी अधिक कष्ट सहन कर रहे हैं। यह है मेरी सहनशक्ति का रहस्य।''

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति एवं जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी की निश्रा में राष्ट्र धर्म के प्रति समर्पण भाव ने सागर परम्परा का गौरव बढ़ा

✻ 31 जुलाई को जैनम् जयंति शासनम् कार्यक्रम में आचार्य श्री यशोविजयजी पधारे। ✻ जैन शब्द की गरिमा को बढ़ानेवाला आयोजन 7 अगस्त को हुआ। ✻ मुंबई के रेल्वे सुरक्षाबलों का सम्मान किया गया। ✻ राष्ट्र धर्म : जैन धर्म पर तिरंगे के साथ 14 अगस्त को जाहिर प्रवचन में जैन सैलाब उमड़ा। ✻ जिनालय शुद्धिकरण का आयोजन जोरदार रहा। ✻ महापर्व आराधना जोरदार रही।

मुंबई- आगमोद्धारक श्री सागरजी महाराजा ने आजादी के समय राष्ट्र पर आए संकट के समय श्रावकों को राष्ट्रहित में दान देने के लिये प्रेरित कर करोड़ रुपये दान करवाये थे, यही कार्य मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागर सूरीजी महाराजा ने भी संकट में फंसे लोगों के लिए दान और सहायता करा राष्ट्रधर्म का पालन किया था इसी अक्षुण परम्परा को आगे बढ़ाते हुए जब 13 से 15 अगस्त तक सारे देश हमारे राष्ट्र के प्रतिक तिरंगे झण्डे को घर-घर फहराने के साथ बड़ी-बड़ी रैलियां आयोजन हो रहे है और सारा देश राष्ट्र भक्ति में रंगा हुआ है। इस शुभ अवसर परशतकवीर सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करने वाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा एवं पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागर सूरी जी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा.एवं युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्रीउज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्री,प.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागर जी म. सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा गोरेगांव चिंतामणी पार्श्व नाथ श्री संघ में दिनांक 14 अगस्त को सैकड़ों धर्मिष्टों की उपस्थिति ''राष्ट्र धर्मः जैन धर्म'' विषय र जाहिर प्रवचन का आयोजन किया गया। वास्तव में यह आयोजन राष्ट्र धर्म के प्रति सच्ची समर्पण भावना का प्रतीक था। सैकडों की संख्या में राष्ट्रभक्त इसमें सम्मिलित हुवे। युवा जैनाचार्यश्री की मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी जिनालय शुद्धिकरण का भव्य आयोजन मध्यप्रदेश,गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के विभिन्न नगरों के श्रीसंघ में स्थित जिनमंदिरों लगभग 1500 जिन मंदिरों के शुद्धिकरण यह भव्य आयोजन दिनांक 14 अगस्त को किया गया। जिनालय में शुद्धिकरण कीट का वितरण भी किया गया। आगम वाचन, भाव यात्रा, नवकार आराधना का आयोजन भी आगामी दिनों में होगें। दीपावली पर सूरी मंत्राराधना नूतनवर्ष की महामांगलिक भी होगी इसके पूर्व महापर्व पर्युषण की आराधना पर सामूहिक तप आराधना भी होगी।आसोज नवपद ओली की की आराधना में भी तपाराधकों के बडी संख्या में जुडने की संभावना है

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठा महोत्सव 14 जनवरी से4 फरवरी 2023 तक चलेगा

उज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदयसागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागरजी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा.आदि ठाणा काचार्तुमास प्रवेश अभ्युदयपुरम् नवनिर्मित तीर्थ में दिनांक 9 जुलाई को हुआ यहां 125 आराधक 50 दिवसीय चार्तुमास आराधना कर रहे है। नौ दिवसीय नवकार मंत्र की आराधना का आयोजन 30 जुलाई से 7 अगस्त तक किया गया। आराधक को एकासणा करवाने के लिये महिला मंडल अलग-अलग दिन आकर भक्ति कर रहे है। अभ्युदयपुरम् का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 4 फरवरी 2023 को 23 दिवसीय भव्य आयोजन के साथ होगा। प्रतिष्ठा के पावन प्रसंग पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अचतमुक्ति सागरजी म.सा. को आचार्य पदवी पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण यहां हुआ है।20 अगस्त को प्रभु का प्रवेश हुआ।

वागड़ नरेश की निश्रा में श्री सिद्धाचल का छ:रि पालित यात्रा संघ निकलेगा

✻ उपधान तपाराधना 27 अक्टूबर से होगी।

✻श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छ:रिपालित यात्रा संघ निकलेगा।

नरोड़ा- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास हाड़ेचा भवन पालीताना में हो रहा है। आपश्री की निश्रा में उपधान तप का शुभारंभ 27 अक्टूबर को होगा। चार्तुमास एवं उपधान तप के संपूर्ण लाभार्थी प्रेमलता बहन जयंतीलाल, प्रयास गांधी परिवार तलवाड़वाले है।

आपकी निश्रा में चार्तुमास उपरांत श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ चन्द्रकांत प्रेमिला बहन कपिल सेठ परिवार के द्वारा आयोजित किया जायेगा। श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ से संघ का प्रयाण दिनांक 26 दिसंबर को होगा एवं माल दादा के दरबार में दिनांक 30 दिसंबर को होगी। संघ में पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का भी सानिध्य रहेगा।

200 सिद्धि तप मुंबई में

मुंबई-गोरेगांव श्री नगर जैन संघ में चार्तुमास हेतु विराजित आचार्य श्री पूर्णचन्द्रसूरीजी म.सा. की निश्रा में हो रहे सिद्धि तप की आराधना में 200 तपस्वी तपाराधना कर रहे है। नियमित प्रवचन में भी अच्छी उपस्थिति रहती है।

इन्दौर में श्रीभगवती सूत्र पर प्रवचन

इन्दौर- तिलकनगर में स्थित श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर परिसर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य श्रीचन्द्र कीर्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.यहां श्री भगवती सूत्र पर प्रवचन दे रहे है।

पायधुनी में दो युवा शिविर लगे

मुंबई- श्री आदेश्वर पंच धर्मशाला जैन मंदिर परिसर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान पूज्यपाद हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. की निश्रा में दो युवा शिविर का आयोजन हुआ। द्वितीय शिविर में दिनांक 24 जुलाई को पूज्यश्री के प्रिय विषय श्री शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना की शुद्धता पवित्राता और विशेषताओं से अवगत कराते हुए युवा जगत को जाग्रत करने का प्रयास किया गया।

108 जोड़े के साथ श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन हुई

सूरत- श्री लक्ष्मीदर्शन तपागच्छ जैन भवन सूरत में सागर समुदाय के आचार्य भगवंत राष्ट्रसंघ श्री चन्द्रानन सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 7 अगस्त को मासक्षमण एवं सिद्धि तपाराधकों की तप अनुमोदनार्थ श्री नाकोड़ा भैरव महापूजन का आयोजन 108 जोड़ों के साथ किया गया। आपकी निश्रा में तप की झाड़ी लगी हुई है। 21 मासक्षमण के तपस्वियों के पारणा की उजमणी दिनांक 12 अगस्त को हुई।

पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी की निश्रा में आध्यात्मिक चार्तुमास चल रहा है

❊ मुनि श्री अक्षतरत्नसागरजी म.सा. को गणि पदवी प्रदान होगी।

उदयपुर- आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य ओलीजी आराधक श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में में मालदास स्ट्रीट में भव्य आध्यात्मिक चार्तुमास चल रहा है। महापर्व पर्युषण की आराधना सामूहिक तप आराधना के स ाथ अच्छी रही। आसोज नवपद ओली की की आराधना में भी तपाराधकों के बडी संख्या में जुडने की संभावना है दीपावली पर मंत्राराधना नूतनवर्ष की महामांगलिक भी होगी साध्वीश्री अर्पितगुणा म.सा. भी चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान है पूज्य मुनि पुंगश्री अक्षतरत्न सागरजी म.सा. को गणि पदवी के लिये सागर गच्छाधिपति की ओर से स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। गणि पदवी अनुकुलता से चार्तुमास के उपरांत होगी। पदवी कहां हो इस बारे श्रावक, श्री संघों के द्वारा अनेक सुझाव दिये गये है जिन पर गहराई से विचार चल रहा है।

त्रिपुटी मुनि भगवंतो की प्रेरणा से विवाह पूर्व की सामाजिक कुरीति के विरुद्ध समाज जाग्रत हुआ

❊ प्रवचन के पुण्य प्रभाव से श्री संघ ने नया पाड़ल बनाया

मुबंई- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नव-अपूर्व- अमर कृपापात्र बंधु त्रिपुटी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म. सा.आदि साधु-साध्वीवृंद का भव्य चातुमार्सिक प्रवेश अंधेरी (वेस्ट) के श्री चंद्रप्रभु स्वामी जैन तपागच्छ श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ शांतावाड़ी मचल रहा है। आपश्री की निश्रा में विभिन्न तप की श्रृंखला के साथ जाप और मंगल अनुष्ठान का शुभारंभ हो गया है। नवकार आराधना,आदि कार्यक्रम का आयोजन होने जा रहा है। प्रवचन में बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का आगमन हो रहा है। दिनांक 17 जुलाई से 82 दिवसीय धर्मचक्र तप का भी शुभांरभ हुआ।

अरविंदनगर उज्जैन में चार्तुमास

उज्जैन- श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्री संघ अरविंदनगर में मातृहृदया साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा-2 का चार्तुमास तप-जप-प्रवचन के साथ प्रसार हो रहा है। श्रृंखलाबद्ध आयंबिल, तपाराधना चल रही है।

वही पार्श्वनाथ में उपधान तप

मंदसौर- प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ श्री वही पार्श्वनाथ में श्रावक से श्रमण बनने की भव्य आराधना उपधान तप होने जा रहा है। उपधान के निश्रादाता आचार्य श्री यशोभद्र सूरीजी म.सा. एवं आचार्य श्री पीयूषभद्र सूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद है, प्रथम प्रवेश 9 अक्टूबर को तथा द्वितीय प्रवेश 11 अक्टूबर को है, मालारोपण 27 नवंबर को होगा। आयोजक चौरड़िया परिवार, नीमच है।

मुंबई में धारदार प्रवचन का भव्य आयोजन

मुंबई- श्री आदिश्वर पोरवाल जैन संघ पायधुनी में चार्तुमास हेतु विराजित क्रांतिकारी जैन संघ पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा., मुनिश्री विरलसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 7 अगस्त को ''सावधान ! धर्म जैन अहिंसक है ! नपुसंक नहीं'' विषय पर धारदार प्रवचन का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही इसके साथ ही ''एक दिन में लखपति'' का आयोजन भी हुआ।

श्री सिद्धाचल की 99 यात्रा

मुंबई- श्रीमद् विजय नेमीसूरीजी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री सोमसुन्दर सूरीजी म.सा.आदि साधु साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में सिद्धाचल गिरिराज की 99 यात्रा का आयोजन श्रीमती मोहित बहन रतनचंद चौहान परिवार के द्वारा किया जा रहा है। 99 यात्रा का शुभारंभ दिनांक 8 नवंबर को होगा। मालारोपण बहुमान 12 दिसंबर 2022 को किया जायेगा। यात्रा की पूर्णाहुति 17 दिसंबर को होगी। सम्पर्क- 9324368679

तलेगांव में उपधान तप

पूना- यहां के समीप तलेगांव में श्रमणी गणनायक पूज्य आचार्यदेव श्री अभयशेखरसूरीजी महाराज आदि साधु साध्वीवृंत की निश्रा मे श्रावक से श्रमण बनानेवाली आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है, प्रथम मुर्हूत दिनांक 29 नवंबर, द्वितीय मुर्हूत दिनांक 1 दिसंबर को है। उपधान तप की माला रोपण विधि दिनांक 18 जनवरी 2023 को होगी।

अनुयोगाचार्य की निश्रा में उन्हेल तपोमय बना : तप की बहार आई

उन्हेल- यहां श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर जिनालय की छत्राछाया में चार्तुमास आराधना कर रहे पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा.,पूज्य आचार्य श्री पद्मभूषणसूरीजी म.सा. एवं साध्वी श्री भक्तिरेखा श्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी वृंद की अमृत निश्रा में तपस्या की बहार आई हुई है। 8 मासक्षमण होने के साथ ही अनेक 16-8-5-3 की भी आराधना श्रावक-श्राविका ने की है इसके साथ ही साध्वी श्री भव्यम्रेखा श्रीजी और साध्वी श्री पुण्यम्रेखा श्रीजी ने 45 उपवास की दीर्घ तपस्या कर उन्हेल में तप का डंगा बजाया है। दिनांक 14 एवं 15 अगस्त को तपस्वियों की तप अनुमोदनार्थ आयोजित तपोत्सव में श्री माणिभद्र महापूजन का आयोजन के साथ सभी तपस्वियों का भव्य वरघोड़ा आयोजन के साथ धर्मसभा में सम्मान, बहुमान एवं पारणा सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही साध्वीजी म.सा. की तप अनुमोदना में 21 एवं 22 अगस्त को आयोजित तपोत्सव में भव्य वरघोड़ा श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई गई। दिनांक 22 अगस्त को साध्वीजी म.सा. के पगले और पारणा लाभार्थी परिवार के यहां चातुर्विध संघ के साथ गाजेबाजे के साथ पहुंचने पर हुआ। 27 जुलाई को 18 पाप स्थानक निवारण महा पूजन का आयोजन किया गया।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ का छ:रिपालित संघ निकलेगा

✻ दोषी परिवार लाभार्थी है।

दिल्ली- श्री प्रेमभुवनभान सूरी समुदायवर्तीय आचार्य भगवंत श्री गुण रत्नसूरीजी महाराज के सुशिष्य आचार्य देवश्री विजय रश्मिरत्न सूरीजी म.सा., मुनि श्री भव्यरत्नविजय जी म.सा. आदि ठाणा आप साबरमती अहमदाबाद में चार्तुमास आराधना के लिये विराजमान है, आपश्री की निश्रा में श्रीमती असुबहन रमनाथमलजी समरथमलजी दोषी परिवार दिल्ली के द्वारा भव्य छःरि पालित यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। संघ, दादा के दरबार से दादा के दरबार के लिये प्रस्थान करेगा। श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताना से संघ का प्रस्थान दिनांक 18 जनवरी 2023 को होगा और मालरोपण दिनांक 31 जनवरी को होगी।

श्री शंखेश्वर में आगम मंदिर में चार्तुमास

गिरनार- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री अर्हमरत्नसागरजी म.सा. का चार्तुमास श्री शंखेश्वर महातीर्थ आगम मंदिर में हो रहा है । तपस्वी मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म . सा. को 98 ओली चल रहीहै । अट्ठम् तपराधना मुनिश्री अर्हम्रत्नसागरजी म.सा. को चल रही है।

श्री नीलवर्णा पार्श्व जिनालय का जीर्णोद्धार होगा

इन्दौर- यहां के कंचनबाग स्थित जिन मंदिर का जीर्णोद्धार का परमात्मा श्री नीलवर्णा पार्श्वप्रभु को नवीन भव्य जिनप्रसाद में विराजमान किया जायेगा। विगत दिनों गणिवर्य श्री सम्यक चंदसागरजी म.सा., श्री चंदनमाला श्रीजी म.सा.आदि साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में जीर्णोद्धार की धार्मिक क्रिया सम्पन्न हुई। अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक 1145 जिन मंदिर की प्रतिष्ठा करवानेवाले शासनरत्न श्री मनोजकुमारजी बाबुमलजी हरण के मार्गदर्शन में अनेक श्रेष्टीवर्यों की उपस्थिति में यह जिन मंदिर जीर्णोद्धार के लिये कार्य आरंभ हुआ।

श्री सिद्धाचल में मासक्षमण तपस्या

पालीताना- आगम मंदिर पालीताना में पूज्य आचार्य भगवंत श्री चन्द्रशेखरसागरसूरीजी म.सा. तथा पालीताना में विराजित साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में साध्वी श्री निरुपमा श्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री चितरत्ना श्रीजी म.सा. को मासक्षमण तपस्या एवं साध्वी श्री अक्षयरेखा श्रीजी म.सा. के द्वारा एक द्रव्य और एक धान से 500 आयंबिल की कठोर तपस्या का पारणा महोत्सव पर दिनांक 4 अगस्त को श्री वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया। पारणा दिनांक 5 अगस्त को सम्पन्न हुआ।

✻ परमात्मा में परम स्नेह चाहे कैसे भी विकट मार्ग से होता हो तो भी उसे करना योग्य है।

गच्छाधिपति पूज्यपाद अभयदेवसूरी महाराजा और सागर गच्छाधिपति की निश्रा मे जैन एकता के शंखनाद का गंभीर प्रयास

✻ श्री बाबूभाई बंसाली एकता के सूत्रधार। ✻ विराट संत सम्मेलन के प्रयास।
✻ विलेपार्ले में 20 विहारमान जिन तप हुआ। ✻ शनिग्रह शांति अनुष्ठान हुआ।
✻ महामांगलिक, गुणानुवाद सभा हुई।

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा एवं शतकवीर सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करने वाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य भगवंत अजात शत्रु श्री नंदी वर्धन सागरसूरीजी, पूज्य आचार्य श्री आचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. श्री आचार्य श्री मोक्षरत्न सूरीजी म. सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में भव्य चार्तुमास विलेपार्ले में करानेवाले श्री बाबूभाई भंसाली के द्वारा सभी समुदाय में एकता का शंखनाद करते हुए इस बारे में सारे देश में विराजमान गुरुभगवंता के साथ अनेक मीटिंग करते हुए सबकी विचारधारा से अवगत होते हुए एकता के गंभीर प्रयास चल रहे है। सभी समुदाय में एकता का क्या स्वरुप हो इस बारे में गुरु भगवंतों में भी गंभीर मंत्राणा चल रही है। सभी समुदाय के चर्चा के उपरांत समाधान के लिये एक एजेंडा निर्धारण करने की कोशिशें भी हो रही है, यह भी गंभीर प्रयास चल रहा है कि- चार्तुमास के बाद सभी समुदाय के गुरु भगवंतों की अनुकूलता से एक संत सम्मेलन का आयोजन अहमदाबाद या अन्य स्थान पर हो और वहां सब वाद-विवादों पर प्रत्यक्ष चर्चा कर उसके समाधान खोज कर सबकी आपस में सहमति बने , यह कोशिश पूरजोर रुप से चल रही है। ऐसे प्रयास पूर्व में भी हुए है और इससे सब समुदाय को एक दूसरे से समझने का मौका भी मिला है। अगर इस बार का प्रयास सफल होता है तो यह जैन जगत के लिये यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

विले पार्ले में पांच आचार्य भगवंतों की निश्रा में चार्तुमास में धर्मबिन्दु ग्रंथ पर प्रवचन हो रहे है। यहां बड़ी संख्या में धार्मिष्ठ 20 विहारमान तप की आराधना से जुड़े है।तकवीर सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करने वाले पूज्यपाद गच्छाधि पति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा के गौरव में सम्पूर्ण जैन जगत के गुरु भगवंतों पूज्यश्री के प्रति असीम श्रद्धा और आदर का भाव प्रदर्शित किया है। विगत दिनों देश भर के श्री संघों में पूज्यश्री की अभ्यर्थना में पूज्यश्री का गुणमान करते हुए अद्भूत गुरु भक्ति और गुरु गौरव को प्रदर्शित किया गया। गुरु भक्ति के सारे देश में विराजमान सागर के साथ विभिन्न समुदाय के जिनशासन के गौरव और मान को बढ़ानेवाले सैकड़ों की संख्या में गुरु भगवंतों सूरीमान मुनि भगवंत एवं साध्वीवर्याश्री ने अमृत निश्रा प्रदान की इसके साथ देशभर के श्रीसंघों में शक्रस्तव महाभिषेक का आयोजन भी हो रहा है।

प्रतिष्ठाचार्य आचार्य देवेश श्री नरदेवसागरसूरीजी की निश्रा में उपधान तप 9 अक्टूबर से आरंभ होगा

शंखेश्वर- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य भोपावर तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म. सा. आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में यहां पूज्यश्री के द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी श्री भगवती सूत्र पर प्रवचन दिये जा रहे है।श्री 108 पार्श्वनाथ भक्तिविहार जैन धर्मशालामें 51 दिवसीय चार्तुमास आराधना चल रही है। चार्तुमास का सम्पूर्ण लाभ मातुश्री सीताबहन लीलाधरभाई नेमजीभाई वडेरा (वाववाला) परिवार ने लिया है। चार्तुमास आराधना की पूर्णाहुति 2 सितंबर को होगी। पूज्यपादश्री की निश्रा में उपधान तप की आराधना भी आसोज सुदी-15 दिनां क 9 अक्टुबंर से आरंभ होगी ऀ उपधान तप में साध्वीवर्या श्री दिव्य दर्शना श्रीजी का मार्गदर्शन रहेगा सम्पर्क - 9879657466

।। श्री परमात्माय नमः ।।

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1

मो.: 09825414470 / 9820078772

स्थापना वि. सं. 1962

इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744

PAN : AAATS8024L

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.

ऑफिस फोन : 2387 8476

मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दोनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

श्रीकृष्णजी के 18000 नरक निवारक वंदना का भव्य आयोजन उज्जैन में हुआ

✲ कार्यक्रम का सम्पूर्ण लाभ डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक परिवार ने लिया। ✲ लक्की ड्रॉ भी निकाले गये।

उज्जैन-श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर चार्तुमास आराधना के लिये विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या जो पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. की बहन महाराज है, साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री कृष्ण महाराजा के द्वारा 18000 नरक निवारक वंदना के भव्य आयोजन की प्रस्तुति के साथ हुआ। इस प्रसंग पर रखे तीर्थंकर परमात्मा के समयशरण की रचना भी बनाई गई थी। श्री कृष्ण महाराज और रानी रुकमणी का चरित्र आदेश जैन और धर्मपत्नी अर्पिता जैन ने निभाया। श्री संघ के साथ श्री कृष्ण राजा परमात्मा के दरबार में पधारे फिर यहां श्री संघ को बधाने, अष्ट प्रकार की पूजा, गीत संगीत के साथ हुई। बीच-बीच में लक्की ड्रॉ भी निकाले गये। संगीतकार श्री यश जैन ने पूरे कार्यक्रम में जोरदार प्रस्तुति दी। पूज्यपाद गुरुदेव मालवभूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का पुण्य स्मरण कर धर्मसभा को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम के बाद सधार्मिक भक्ति हुई। नवकार महामंत्र के नौ दिवसीय आयोजन में 68 श्रावक-श्राविका ने आराधना के अंतिम दिन पारणा के लाभार्थी डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक ने लिया। सभी तपस्वीयों का बहुमान किया गया। मंगल स्वरुप यहां बड़ा उपाश्रय में विराजित साध्वीवर्या श्री हितदर्शना श्रीजी एवं चारुदर्शना श्रीजी भी पधारे एवं सामायिक प्रवचन दिये।

पिण्डवाड़ा धर्मशाला में आराधना

पालीताना- मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के सुशिष्य उपाध्याय युवद श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री विरक्तरत्नसागरजी म.सा. के साथ साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास चल रहा है। यहां 130 आराधकों के साथ 51 दिवसीय आराधना हो रही है। आराधक 5 तिथि पर आयंबिल की आराधना कर रहे है।

अखण्ड श्री वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक

महिदपुर- यहां श्री शत्रुंजय आदिनाथ धाम में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य साध्वी श्री मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री मृदुप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में दिनांक 31 जुलाई को अखंड श्री वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया। श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ के अंतर्गत आयोजन हुआ। दिनांक 9 अगस्त को ''माँ तुझे सलाम'' विषय पर श्री शांतिनाथ आराधना भवन पर प्रवचन हुए।

45 आगम महापूजन हुई

रतलाम- यहां चार्तुमास आराधना के लिये विराजमान पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अपूर्वचंद्रसागरजी म.सा. एवं साध्वी श्री राजरत्ना श्रीजी, साध्वी श्री शुचिप्रज्ञा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी महाराजा के 148 वें जन्म जयंति की अनुमोदना में दिनांक 31 जुलाई को 45 आगम महापूजन आयोजित की गई। यह कार्यक्रम आगमोद्धारक आराधना भवन में हुआ।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्मक्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को है। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

बाल तपस्वी मुनिश्री को 43 ओली का पारणा

मुंबई-दादर (वे) में श्री लब्धिसूरी ज्ञान मंदिर में श्री शीतलनाथ प्रभु की छत्र छाया में चार्तुमास की आराधना के लिये विराजमान पूज्य आचार्य श्री रवि देव सूरीजी म.सा. की निश्रा में बाल तपस्वी मुनिश्री आचरंगप्रियविजयजी म.सा. को 43 वीं वर्धमान तप ओली आराधना का पारणा दिनांक 4 अगस्त को हुआ। तपोत्सव प्रसंग पर पूज्यबाल मुनि की अभ्यर्थना में तपस्वी गुण एवं संगीतमय सांझी का आयोजन किया गया।

बंधुबेलड़ी आचार्यश्री जिनचंदसागरसूरी की निश्रा में महामंत्र की आराधना हुई

सूरत- यहां के श्री उमरा जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत श्री जिनचंदसागरसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में महामंत्र नवकार की नौ दिवसीय भव्य आराधना का आयोजन दिनांक 30 जुलाई से किया गया। आराधना की पूर्णाहुति 7 अगस्त को हुई। आराधना में 400 आराधकों ने भाग लिया इस धर्म प्रसंग पर नवकार मंदिर का भव्य निर्माण किया गया एवं महामंत्र के प्रत्येक पद के विशिष्ट अनुष्ठान के साथ क्रिया विधि की गई। नौ दिवसीय अखण्ड जाप और भक्ति भावना हुई।

अम्बामाता उदयपुर में चार्तुमास

उदयपुर- महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति अम्बामाता में मेवाड़ देशोद्धारक श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री निपुणरत्न सूरीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश दिनांक 7 जुलाई को हुआ। आपकी निश्रा में चार्तुमास के अंतर्गत विभिन्न तपाराधना, जाप और अनुष्ठान के आयोजन होंगे। दिनांक 20 जुलाई से सिद्धितप का शुभारंभ हुआ एवं 36 लाख नवकार महामंत्र का जाप भी पूज्यश्री की निश्रा में आरंभ हुआ। पूज्यश्री की प्रेरणा से कभी भी पालीताना नहीं जानेवाले धर्मिष्ठों के लिये निःशुल्क पालीताना की यात्रा भी कराई जायेगी। आसोज आली का आयोजन भी होगा।

अंतरिक्ष महातीर्थ में प्रतिष्ठा के चढ़ावे

मुंबई- श्री अंतरिक्ष महातीर्थ में भव्य नवनिर्मित जिनप्रसाद की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव की सम्पूर्ण तैयारियां और प्रतिष्ठा के सभी चढ़ावे आचार्यश्री यशोविजयसूरीजी,आ. श्री राजपुण्य सूरीजी, आ.श्री जिनसुन्दरसूरीजी, पंन्यास श्री ऋतुविजयजी, श्री विमल हंस विजयजी, श्री परमहंस विजयजी आदि विशाल संख्या में श्रमण- श्रमणी वृंद के बीच 7 अगस्त को श्री जवाहर नगर जैन संघ गोरेगांव में 21 अगस्त को गोवालिया टैंक में तथा 21 अगस्त को ही श्री अंतरीक्ष तीर्थ में बोले गये। स्मरण रहे श्री अंतरीक्ष तीर्थ में नवनिर्मित विशाल जिनप्रसाद के लिये अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन फरवरी 2023 में होने जा रहा है।

द्वादशान्हिका जिनभक्ति महोत्सव

मंदसौर- आचार्य श्री विजय यशोभद्रसूरी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में आराधक भवन जैन संघ में दिनांक 5 से 15 अगस्त तक द्वादशान्हिका जिन भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। पदाभिषेक अंतिम दिन प्रदान किया गया महोत्सव विविध धर्मअनुष्ठान,पूजन,महापूजन, गुणानुवाद सभा हुई।

झाबुआ में गच्छाधिपति का चार्तुमास

झाबुआ-त्रिस्तुतिक समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में यहां चार्तुमास आराधना में धर्मिष्ठभाव उत्साह से जुड़े हुए है। दिनांक 4 अगस्त से पूज्यश्री की निश्रा में नवकार महामंत्र की आराधना आरंभ हुई। 13 अगस्त को आराधना की पूर्णाहुति होगी।

उज्जैन में धर्म अनुष्ठान एवं महामंत्र की नौ दिवसीय आराधना से वातावरण धार्मिक बना

उज्जैन- यहां श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजित पूज्य साध्वीवर्या श्री कुसुमश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्नाश्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में विभिन्न धर्म अनुष्ठान जाप और महामंत्र की आराधना के आयोजन हुए। जाप आराधना कक्ष का उद्घाटन डॉ. सुभाष जैन आगमोद्धारक के द्वारा किया गया। महामंत्र की आराधना में एकासणा का लाभ भी आपने लिया। पूणिया श्रावक की सामायिक, आगमोद्धारकश्री की जन्म जयंति पर गुणानुवाद सभी नौ दिवसीय महामंत्र आराधना में 68 आराधक जुड़े, गिरनार की भावयात्रा, श्री नेमीनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक पर अनुष्ठान पूज्यपाद गच्छाधिपति अभ्यनार्थ ॐ ह्रीं नमो अयरियाणं का जाप हुआ। श्री पार्श्वनाथ प्रभु के मोक्ष कल्याणक पर आयोजन, जिनालय शुद्धिकरण एवं अष्टप्रातिहार्य युक्त वीतराग वंदना के आयोजन हुए,आगे भी विभिन्न आयोजन होंगे।

मालवा के जैनाचार्य की निश्रा में उपधान तपाराधना 6 अक्टूबर को होगी

✻ पालीताना में नव्वाणुं का आयोजन होगा।

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरजी महाराज 260 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्न सागरसूरी जी,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणाके साथ साध्वीवृंदों की अमृत निश्रा में श्रीआनंद चन्द्र अभ्युदय नगर वावपथक धर्मशाला तलेटीरोड़ पर श्रावक से श्रमण बनने की महा तपाराधना उपधान तप का शुभारंभ प्रथम उपधान करने वालों के लिये प्रथम मुर्हूत दिनांक 6 अक्टूबर को तथा दूसरा मुर्हूत 8 अक्टूबर से है। दूसरा-तीसरा उपधान करनेवाले आराधकों के लिये प्रथम मुर्हूत 5 अक्टूबर तथा दूसरा मुर्हूत 7 अक्टूबर से है। उपधान तप की माल रोपण विधि दिनांक 24 नवंबर को सम्पन्न होगी।सिद्धक्षेत्र गिरिराज की छत्र छाया पालीताना-आगम मंदिर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान गुरुभगवंतो-साध्वीजी की निश्रा में विभिन्न धर्म क्रिया, क्रिया रहस्य, फिर जहिर प्रवचन, आगम वाचना, भावयात्रा, नवकार सप्ताह और इतिहास सप्ताह के अंतर्गत जैन धर्म में संबंधी रोचक और उपयोगी जानकारी दी जा रही है। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठ प्रवचन का लाभ ले रहे है। साथ ही आगामी कार्तिक पूनम से वहां भव्य नव्वाणुं यात्रा आरम्भ होगी ।तपस्वी ऑन लाईन 80195-82527 मोबाईल पर सम्पर्क करें।

गिरनारजी में 108 नव्वांणु यात्रा होगी

चैन्नई- श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गिरनार महातीर्थ में 108 नव्वांणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यात्रा का आरंभ दिनांक 22 फरवरी 2023 को होगा। संघमाल 26 मार्च को होगी। संपर्क- 9840052494

पालीताना में उपधान

पालीताना- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंद सूरीश्वरजी महाराज एवं पूज्य उपाध्याय श्री दिव्यानंदविजयजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा श्री गजभंवर जैन धर्मशाला में 12 सितंबर से उपधान तपाराधना का शुभारंभ होगा। तप की मोक्षमाल 2 नवंबर को होगी।

केशरवाड़ी में उपधान तप

चैन्नई- श्री कलापूर्ण जैन आराधक मंडल के संयोजन में केशरवाड़ी में श्रावक से श्रमण बनने की धार्मिक क्रिया उपधान का आयोजन होने जा रहा है।पू. आचार्यश्री उदयप्रभ सूरीजी म.सा. की निश्रा में आयोजित होनेवाले उपधान का प्रथम मुर्हूत 18 दिसंबर को है, द्वितीय मुर्हूत 20 दिसंबर को तथा मोक्षमाला रोपण 5 फरवरी 2023 को होगा।

गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा

गिरनार- तपोवन के पूज्य पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीश्वरजी म.सा., पंन्यास श्री विजय पद्मदर्शन म.सा. एवं मुनिश्री दिव्यपद्म विजयजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में श्री गिरनार तीर्थ में नव्वाणुं यात्रा होने जा रही है। पूज्यश्री का प्रवेश 9 नवंबर को होगा एवं नव्वाणुं यात्रा 10 नवंबर से आरंभ होगी। सम्पर्क करें- 9265643444

संघवी परिवार में श्राविका बहनों ने तीन मासक्षमण कर तप का डंका बजाया

अहमदाबाद-साबरमती रामनगर में चार्तुमासिक आराधना के लिये विराजमान आजीवन गुरुगुण चरणोपासक श्रमण गणनायक आ.श्री रश्मिरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी भगवंता की अमृत निश्रा में भव्य तपोत्सव का आयोजन हुआ। संघवी समीबाई केवलचंद नरसाजी हुणगौत्र परमार परिवार की सुश्राविका श्रीमती पोपट बहन प्रकाशचंद संघवी, श्रीमती नीलमबहन प्रमोदजी संघवी, श्रीमती शीतल बहन दिव्य संघवी ने मासक्षमण तपाराधना कर तप का डंका बजा दिया। इस मंगल तप प्रसंग पर दिनांक 11 से 15 अगस्त तक तपोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 14 अगस्त को तपस्वी बहनों की तप अनुमोदनार्थ भव्य वरघोड़ा निकाला गया। दिनांक 15 अगस्त को पूज्य गुरु भगवंतों, साध्वी भगवंतों की निश्रा में तप पारणा सम्पन्न हुआ।

✻ बुद्धिमान व्यक्ति मात्र अनुमान से ही दूरदर्शिता का विचार कर लेता है।

साबरमती जैन संघ में 2700 भातपानी के आयंबिल का रिकार्ड बना

अहमदाबाद- साबरमती जैन संघ में आजीवन गुरुगुण चरणोपासक श्रमण गणनायक आ.श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि 300 से अधिक साधु-साध्वीजी भगवंतों की निश्रा में 451 दीक्षादानेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्न सूरीजी म.सा. के द्वितीय स्वर्गारोहण तिथि निमित्त श्री गुणरश्मि परिवार द्वारा गुरुगुण गौरवगाथा का भव्य महोत्सव मनाया गया। दिनांक 19 जुलाई को संगीतमय भावाचार्य वंदना तथा 20 जुलाई को सद्‌गुरु स्तव 50 मुमुक्षुओं ने गुरुमूर्ति का अक्षत अभिषेक किया तथा 21 जुलाई को गुरुगुण गौरवगथा 2000 से अधिक समूह सामायिक 2700 भातपानी के रिकार्ड आयंबिल और शुद्ध प्रतिक्रमण हुआ। अनेक महात्माओं ने गुणानुवाद किये। श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय में भव्य महापूजा का आयोजन किया गया।

भोपाल में महामंत्र आराधना हुई

भोपाल- श्री आदिनाथ जैन श्री संघ तुलसीनगर भोपाल में पूज्य साध्वी श्री मुक्तिरेखा श्रीजी एवं श्री अस्मिता श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में महामंत्र नवकार की नौ दिवसीय आराधना दिनांक 29 जुलाई से 6 अगस्त तक आयोजित की गई। महामंत्र के 68 अक्षरों के अनुसार 68 तीर्थों का परिचय दिया गया साथ प्रत्येक दिन पद के अनुसार क्रिया विधि- अनुष्ठान, जाप आराधकों ने किये। दिनांक 31 जुलाई को श्री सिद्धाचल महातीर्थ की भाव यात्रा करवाई गई।

जैनाचार्य श्री रश्मिरत्न सूरीजी ने विशाल सभा को संबोधित करते हुए कहा कि चार्तुमास में आत्मा के 9 आभूषण धारण करने चाहिये। सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, प्रभुपूजा स्नात्र, प्रभुविलेपन, ब्रह्मचर्यपालन, सुपात्रादान और तप ! जैन धर्म में मासक्षमण को मृत्युंजय तप कहा जाता है। तप करने से आत्मा पवित्र होती है। भगवान श्रीमहावीर ने नंदन ऋषि के भव में 11 लाख 80 हजार 645 मासक्षमण किये थे। यहां पहली बार सामूहिक मासक्षमण में 200 से अधिक तपस्वीयों का पारणा 15 अगस्त को हुआ।

श्री सिमंधरस्वामीजी की भावयात्रा

पालीताना- ॐ शांति भवन में विराजित मुनिश्री कल्परत्न-शिव सुंदर-हर्षमुनिश्री बोधिविजयजी म.सा., साध्वी श्री हितप्रज्ञा श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री सिमंधर स्वामीजी परमात्मा की भावयात्रा का आयोजन दिनांक 4 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम की प्रस्तुति डॉ. मोहन -मनोज जैन चैन्नई के द्वारा की गई।यहों श्री कृष्ण महाराजा के द्वारा 18000 नरक निवारक वंदना का भव्य आयोजन दिनांक 10 अगस्त को किया गया ॐ शांति भवन में दिनांक 17 अगस्त को 1008 सामायिक का आयोजन किया गया। सभी आराधकों ने दो सामायिक की। यहां आयोजित चार्तुमास का सम्पूर्ण मार्गदर्शन प्रेरणा अंतर्राष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमारजी बाबूमलजी हरण सिरोहीवाला है।

श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. का 2023 का चार्तुमास दक्षिण भारत में

प.पू. आचार्य श्री नेमि-लावण्य-दक्ष-सुशील गुरुकृप प्राप्त प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रविचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण -श्रमणी परिवार का सन् 2023 वर्ष का चार्तुमास दक्षिण भारत में करने की क्षेत्र स्पर्शना के अनुसार स्वीकृति प्रदान की है। सन् 2022 का चार्तुमास अनंत सिद्धों की पावन भूमि श्री सिद्धाचल पालीताना महातीर्थ में होगा एवं आसोज मास में विशाल संख्या में श्री उपधान तप की आराधना होगी। उपधान तप 6 अक्टूबर से होगा। माला 24 नवंबर को होगा।

गोरेगांव में ओली पारणा महोत्सव मना

मुंबई- श्री वागड़ विशा ओसवाल श्री संघ गोरेगांव में चार्तुमास हेतु विराजित श्री कलापूर्णसूरीजी समुदाय-वर्तीय साध्वीवर्या श्री यशोवलाश्रीजी म.सा. को 100+46 वर्धमान तप ओलीजी एवं साध्वी श्री अभयरत्ना श्रीजी को 89 वीं ओली का पारणा आचार्य भगवंत श्री विजयपूर्णचंदसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वी की निश्रा में श्रीमती ताराबहन तेलीसरा परिवार के घर हुआ। पारणा दिनांक 4 अगस्त को हुआ।

✲ किसी के हक या अधिकार को दबाकर उस धन से बड़ा मकान, बहुमूल्य वस्त्र या स्वादिष्ट पदार्थों का उपभोग करना यह वृत्ति अधर्म वृत्ति है।

जैनाचार्यश्री जिनोत्तमसूरीजी के संयमचर्या के 50 एवं आचार्य पदवी के 25 वर्ष पूर्ण होने पर महोत्सव

पालीताना- पूज्य नेमी सूरी समुदाय के आचार्य भगवंत श्री सुशील सूरीजी म.सा. के सुशिष्य जैनाचार्य श्री सुशीलसूरीजी म.सा. के संयम जीवन के 50 वर्ष तथा आचार्य पदवी के 25 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण महोत्सव का आयोजन 20 से 24 नवंबर तक आयोजित होगा इसके अंतर्गत दिनांक 20 नवंबर को 51 छोड़ के साथ उजमणा एवं आर्ट गैलरी बनाई जायेगी इसका उद्‌घाटन और श्री नाकोड़ा पार्श्व भैरव पूजन पढ़ाई जायेगी। 21 नवंबर को श्री शंखेश्वर महातीर्थ की भावयात्रा कराई जायेगी। दिनांक 22 नवंबर को 51 मंगल कलश के साथ भव्य सामैय्या एवं गुरु गुणानुवाद सभा होगी। दिनांक 23 नवंबर को संयम उपकरण वंदनावली उपधान तप के लाभार्थी का बहुमान मोक्षमाल का वरघोड़ा गांव सांझी तथा तलेटी पर महापूजन होगी। उपधान तप दिनांक 6 अक्टूबर को आरंभ होगी एवं उपधान माल दिनांक 24 नवंबर को होगी। उपधान समवड़ी भवन में होगा।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ में ओली आराधना

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री नयभद्र सूरीजी म.सा. की निश्रा में यहां बनासकांठा धर्मशाला में आसोज नवपद ओली आराधना का भव्य आयोजन होगा। दिनांक 1 से 9 अक्टूबर तक आराधना और 10 अक्टूबर को पारणा होगा। आपने भी वर्धमान तप की 100+100+39 ओली की है।

श्री शत्रुंजय महातीर्थ महोत्सव

मुंबई- यहां के श्री भक्ति पार्श्व नाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन संघ में चातुर्मासिक आराधना के लिये विराजमान युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी म.सा. के युवा शिष्य शतावधानी मुनिश्री उदयरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री उत्तमरत्न सागरजी म.सा.,नीति सूरी समुदाय की साध्वी श्री हर्षितप्रज्ञा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री शत्रुंजय महातीर्थ के 16 वें जीर्णोद्धार का आयोजन किया गया साथ ही सिद्धशिला पूजन का आयोजन भी हुआ। यह कार्यक्रम दिनांक 30 जुलाई को हुआ। दिनांक 28 जुलाई को आगमोद्धारकश्री का 148 वां जन्मदिन आगम प्रदर्शनी के साथ भव्य रुप से मनाया गया।

ध्वजा योजना

अहमदाबाद-श्री जिन भक्ति के द्वारा देश के समस्त जिन मंदिरों के लिये ध्वजा निर्माण का प्रदान किया जाता है। विगत 10 वर्षों से देशभर के मंदिरजी में अब तक संस्था के द्वारा 2 लाख 36 हजार ध्वजा प्रदान की गई है। संस्था की तीन फैक्ट्री में 100 कारीगर प्रतिदिन 500 ध्वजा का निर्माण करने की प्रक्रिया कर 250 ध्वजा रोज तैयार करते है। आप अपने यहां जिन मंदिर के लिये ध्वजा हेतु श्री नवीन गांधी 93280-70214 से सम्पर्क कर सकते हैं।

डॉ. सुभाष जैन ने जम्मु श्री संघ में पर्वाराधना करवाई

अमरावती- अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक शासनरत्न श्री मनोज कुमा र बाबूलालजी हरण की प्रेरणा और मार्गदर्शन के साथ आत्मानंद जैन सभा के अंतर्गत जम्मु जैन तपागच्छ श्री संघ के नागेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर परिसर में संघ के श्री विनोदजी आदि वरिष्ठों के आग्रह पर डॉ. सुभाष जैन आगमोघ्दारक एवं यश जैन महापर्व पर्युषण की आराधना दिनांक 24 से 31 अगस्त तक करवाने के लिये जम्मु पहुंचे। संघ में निर्विध्न रुप से उमंग उत्साह के साथ अष्टान्हिका एवं कल्पसूत्र पर प्रवचन प्रश्न पत्र प्रतियोगिता एवं विभिन्न आयोजन के साथ आराधना हुई।

गिरनार से श्री गिरनार का संघ

गिरनार- पू. मुनि भगवंत श्री पद्म दर्शन विजयजी एवं मुनिश्री दिव्य पद्म विजयजी म.सा. की निश्रा में श्री गिरनार से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित होगा। दिनांक 25 दिसंबर को संघ का प्रयाण और 30 दिसंबर को संघ का आगमन होगा। संघ माल दिनांक 1 जनवरी 2023 को होगी। साध्वी हंसकीर्ति श्रीजी म.सा. 100+100+ 100+65 संघ में पधारेंगे।

एक ही परिवार में 22 सिद्धितप- मासक्षमण

सिकन्दराबाद- जिन शासन में पुण्यवंत तपस्वीयों के कारण जययंता है। यहां के एक ही परिवार में 22 तपस्वी सिद्धितप की आराधना कर रहे है उसमें से दो तपस्वी मासक्षमण की घोर तपस्या कर रहे है। बहुत-बहुत अनुमोदना।

हमारे तीज-त्यौहार

1- भादवा सुदी-11	मंगलवार	6-9-2022	जगत गुरु हीरसूरीजी म.सा. का 426 वां स्वर्गवास दिन
2- आसोज वदी-5	शुक्रवार	30-9-2022	यक्षेन्द्रराज श्री माणिभद्रवीर का स्मृति का दिन

पंचक :

आरम्भः- भादवा सुदी-14, शुक्रवार, दिनांक 9-9-2022, समय-21.08 बजे से

समाप्तः- आसोज वदी-3, मंगलवार, दिनांक 13-9-2022, समय-06.37 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :-

आरम्भः- आसोज वदी-10, मंगलवार, दिनांक 20-9-2022, समय-00.40 बजे तक

समाप्तः- आसोज वदी-11, बुधवार, दिनांक 21-9-2022, समय-23.48 बजे तक

18-पाप-स्थान

आत्मा के लिये पाप-स्थान ये अवरोधक है ।अतः आत्मा को उपर उठने देने में विध्नरुप है । कर्म क्षय की प्रवृत्ति में विघ्नरुप है । धर्माराधना में विध्नरुप है । भगवदुपासना में अंतराय रुप है । किसी भी रुप से देखिए ये पाप आत्मा को लाभ कर्ता तो है ही नहीं । इनके जीवन में आत्मा को कोई फायदा नहीं है । अतः अध्यात्ममार्ग में प्रगति साधने के साधकों को पापस्थानों से सावधान रहना चाहिये और पाप प्रवृत्ति से बचना चाहिये !

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें ।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें ।

माह अक्टुबंर 2022 का अंक
श्री नवपद ओली
एवं
दीपावली विशेषांक
रहेगा आपकी रचनाऐं भेजिये

सादर आमंत्रण

* पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें ।

* आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

* पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

* अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें ।

- सम्पादक

मुंबई महानगर के गोरेगांव वेस्ट में
रेलवे सुरक्षा बल (RPF) के लिए
"चले शांति की ओर" विशेष सेमिनार का आयोजन

वर्ष 27 | भादवा-आश्विन | सितम्बर-2022 | अंक 9 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड़, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897